वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १५ अंक १२ दिसम्बर २०१५

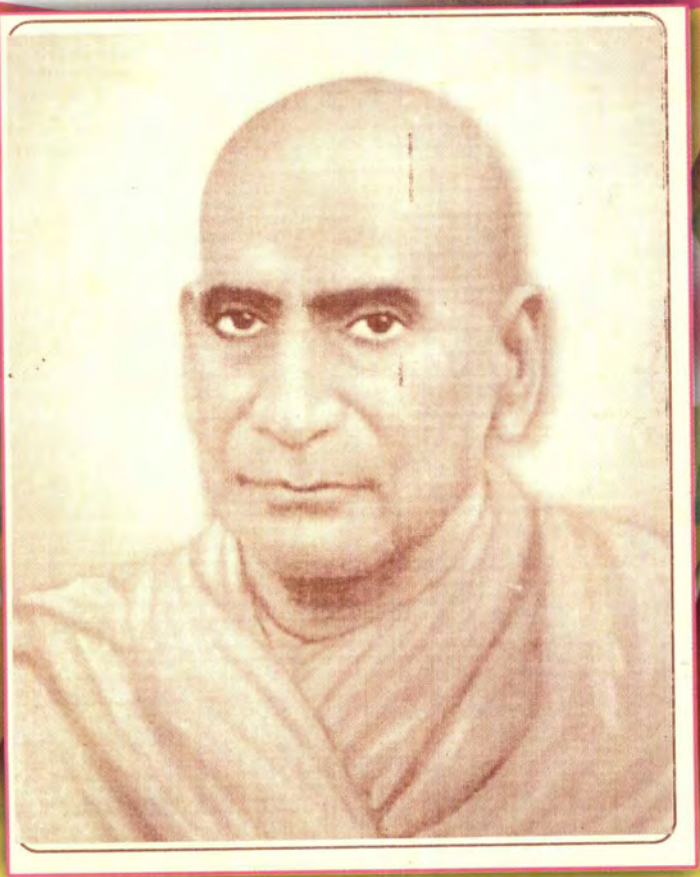

शूरता की शान, अमर आर्य बलिदानी

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती

बलिदान दिवस (२३ दिसम्बर) पर शत् शत् अभिवादन...!

ऑस्ट्रेलिया का आर्य महासम्मेलन संपन्न कर लौटे हुए महाराष्ट्र सभा के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, विज्ञानमुनिजी, व सौ.सावित्रीदेवी राठौर ।

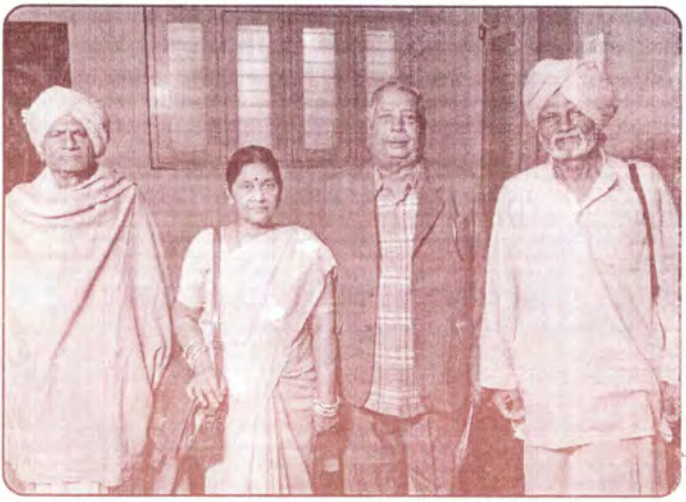

वैदिक व्याख्यानमाला वेदप्रचार वाहन को ध्वज दिखाकर विदा करते हुए श्री लक्ष्मणराव आर्य, पं.सुधाकर शास्त्री, प्रतापसिंह चौहान, आर्यमुनिजी, कर्ममुनिजी, तिवारजी आदि ।

स्व.बिराजदार वक्तृत्व स्पर्धा की दो विजेत्री छात्राओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए सौ. लीलावती जगदाले एवं सौ.कांचनदेवी अग्रवाल ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६ कलि संवत् ५११६ विक्रम संवत् २०७२

दयानन्दाब्द १९१ मार्गशीर्ष दिसम्बर २०१५

प्रधान सम्पादक
माधव के. देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५१९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रो.देवदत्त तुंगार, प्रो.ओमप्रकाश होलीकर
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) चले मानवता की राह पर (सम्पादकीयम्)......४
२) हैदराबाद संग्राम के हु.भाई श्यामलालजी......५
३) रक्तसाक्षी वेदप्रकाशजी......१०
४) सिडनी का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन......१२
५) समाचार दर्पण......१५

मराठी विभाग

१) सुभाषित संदेश/दयानंदांची अमृतवाणी......१९
२) यज्ञाविषयी वैज्ञानिक संशोधन व निष्कर्ष......२०
३) बलिदानी आर्य नेते-स्वामी श्रद्धानंदजी......२२
४) सभेच्या स्थिरनिधी -प्रचारकार्याचा आधार......२४
५) वार्ता विशेष......२६
६) सभा उपक्रम......३३
७) शोक वार्ता......३४

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. १००/-
आजीवन रु. १०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

सम्पादकीयम्

चलें मानवता की राह पर ....

अनादि काल से मानवमात्र के संपूर्ण कल्याण हेतु वेदज्ञान की पावन ज्ञानसरिता बहती चली आ रही है । इनमें सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए जो बाते आवश्यक समझी जाती हैं, उनका प्रतिपादन मार्मिक रूप से किया गया है । वेदों का सामाजिक प्रगति का संदेश सार्वकालिक, सार्वभौमिक, सार्वदेशिक व प्राणिमात्र के पूर्ण कल्याण का है । वेदों की अमृतवाणी केवल एकांगपूर्ण नही, बल्कि वह तो सर्वसमावेशक व अंतर्बाह्य प्रगति करनेवाली है । वेदों के तत्त्वज्ञान से ही विश्व की मूलभूत समस्याओं का यथार्थ समाधान होता है । सम् उपसर्गपूर्वक अज् इस चलन व गत्यर्थक धातु से उत्पन्न हुआ समाज यह शब्द चलना, प्रगति करना, सद् व्यवहार आदि अर्थों को अभिव्यक्त करता है । जो मानवसमूह सदैव गतिमान रहता है, वही सही अर्थों में प्रगतिशील व विकासोन्मुख माना जाता है । अच्छे मनुष्यों के कारण ही समाज का नवनिर्माण होता है । इसी कारण वैदिक वाङ्मय में सबसे पहले श्रेष्ठ मनुष्य बनने के संकेत मिलते हैं –

'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ।'

उत्तम सद्गुणोंवाला व्यक्ति ही उत्तम कार्य कर सकता है । इस कारण उसमें सर्वप्रथम मननशीलता व दूरदर्शिता होनी चाहिए । तभी वह आदर्श नागरिक बन सकता है । वेद ऐसे उत्तम गुणयुक्त मनुष्यों को ही दिव्य सन्तान उत्पन्न करने का आदेश देते हैं । अच्छाईयां मनुष्य में तभी आ सकती है, जब वह कठोर परिश्रम करेगा। वेदमन्त्र में इसी बात का प्रतिपादन करते हुए कहा है–'तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ।' अर्थात् हे मनुष्य! तुम्हें जीवनरुप वस्त्र के ताने–बाने को (धागों को)अच्छी तरह से बुनना है और आकाश में स्थित प्रकाशयुक्त सूर्य के मार्ग का अनुकरण करना है । साथ ही सद्विधा व सुबुद्धि से परिपूर्ण होकर उस सत्यप्रकाश स्वरुप (ज्ञान) मार्ग का संरक्षण भी करना है । इसी के साथ कुछ ऐसे कार्य करने हैं, जिनमें कि किसी प्रकार का भ्रम होगा, न द्वंद्व ! यदि वेदानुमोदित इस तरह के श्रेष्ठ कर्मों का विस्तार करोगे, तो ही देश व समाज में समय–समय पर अच्छे महापुरुषों का आविर्भाव होता रहेगा और उन्हीं के माध्यम से दिव्य सन्तानें प्राप्त होती रहेंगी । मनुष्य जब अपनी जन्म–जन्मान्तरों की प्रवृत्तियों में सुधार लायेगा, तभी वह मनुजता को प्राप्त होगा ।

–डॉ.नयनकुमार आचार्य

हैदराबाद संग्राम के आद्य नेता - हु. भाई श्यामलालजी

– (स्व.)डॉ.कुशलदेव शास्त्री

''हैदराबाद रियासत में वह हिंदू-मुस्लिम दंगों का काल था । हिंदुओं के दिलों-दिमाग में असंतोष की ज्वाला धधक रही थी । निजाम सत्ता का निरंतर चल रहा दमनचक्र अब उनके लिये बिलकुल असह्य होता जा रहा था । फलत: इस दमन के विरुद्ध हिंदुओं ने विद्रोह शुरु कर दिया । दौर्भाग्य से इस विद्रोह को सांप्रदायिक दंगों का रुप-रंग मिलता चला गया और उसकी साम्प्रदायिकता में परिणति होने लगी, पर इसके लिए भी धैर्य और कष्ट सहन करने की मानसिक तैयारी की आवश्यकता थी । ऐसी स्थिति में दमनचक्र पर प्रतिबंध लगाने की विश्लेषणात्मक चर्चा करने में लोग तल्लीन थे । वे उनका नेतृत्त्व करनेवालों को पूर्ण सहयोग देने के लिए बिलकुल तैयार एवं उत्सुक थे । ऐसे समय में आर्य समाज ने इन असंतुष्ट-क्षुब्ध लोगों का नेतृत्त्व किया । फलस्वरुप निजाम सरकार की वक्रदृष्टि आर्य समाज के अनेक कार्यकर्त्ताओं की ओर घुमने लगी। ये सभी आर्य कार्यकर्त्ता सरकारी रोष के शिकार हुए, फिर भी उनका प्रतिकारात्मक संघर्ष चालू ही था। आर्य समाज यह एक विशुद्ध-निर्मल-ईमानदार-प्रामाणिक संस्था थी ।.....''

उपरोक्त शब्दों में हैदराबाद मुक्ति संग्राम के सेनानी स्वामी रामानन्द तीर्थ जी ने अपनी आत्मकथा- **'हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्रामाच्या आठवणी'** में आर्यसमाज का गौरव गान किया है । हैदराबाद राज्य में आर्य समाज को जो यह प्रतिष्ठा मिली, उसमें महत्वपूर्ण भूमिका भाई श्यामलाल जी वकील की रही है ।

हैदराबाद राज्य के इतिहास में राम-लक्ष्मण की जोडी के नाम से प्रसिद्ध पं.बन्सीलाल जी वकील और भाई श्यामलाल जी वकील से कौन अपरिचित हैं ? जिन्होंने उस समय आर्यसमाज की पताका को उन्नत किया, जिस समय निजाम राज्य उसे गिराने में संलग्न था । आर्य समाज बनाने की आज्ञा न थी, हवन करना वर्जित था, उपदेश देने और सुननेवालों के लिए हथकडियाँ तैयार रहती थी, उस समय इन दोनों सहोदर बन्धुओं ने शूरवीरता के साथ हैदराबाद राज्य में जन-जागृति का कार्य किया । महाराष्ट्र के प्रख्यात समीक्षक प्रा.नरहर कुरुंदकर जी अपने एक लेख में श्यामलाल जी का निम्नांकित शब्दों में कृतज्ञता के साथ स्मरण करते हैं -

'स्वर्गीय श्यामलालजी हमारे मुक्ति आंदोलन के आद्य नेताओं में से एक हैं । उनका स्मरण किसी हाल में नही भुलाया

जा सकता, ... दस वर्ष की आयु से मैं श्यामलालजी की कहानी, हमारे श्रद्धेय हुतात्माओं की कहानी होने के कारण बडी श्रद्धा से सुनता व कहता आया हूं। स्टेट कांग्रेस की स्थापना से भी पहले १९३० से लेकर आर्य समाज जन-जागृति पर जोर दे रहा था और संघर्ष के लिए लोगों को प्रेरित कर रहा था, जिला बीदर में यह काम करनेवालों में अग्रभागी थे -**'हुतामा श्यामलाल और उनके साथी '**। मराठवाडा विभाग में इस बलिदानी परम्परा के अग्रदूत हुतात्मा श्यामलालजी हैं। इस शहीद के खून ने हमारी सम्मानपूर्वक जीने की इच्छा को मजबूत किया।'

वास्तव में भाई श्यामलालजी का व्यक्तित्व बहुगुणसम्पन्न था, वे आजीवन ब्रह्मचारी रहे। भाई जी में संगठन करने की अद्भुत क्षमता थी, उनके जिधर भी कदम बढते, उधर ही एक संगठन तैय्यार होता। उन्होंने अखाडे खोले, जिसमें नौजवानों ने शारीरिक शक्ति की उपासना की। शास्त्रार्थ एवं शुद्धि के माध्यम से बिछुडों को गले लगाने में भी आप सर्वाग्रणी रहे। आपने जातीयता निर्मूलन के लिये सहभोज व अन्तर्जातीय विवाह की प्रेरणा अनेक युवकों को दी। भाई श्यामलालजी दलितोद्धार के कार्य में भी सबसे आगे नजर आते थे। उनका घर रात्रि में दलितों की निःशुल्क पाठशाला बन जाता था। स्त्री-जाति के उद्धार के लिए भी वे सतत संलग्न रहे। उन्होंने उदगीर में 'आर्य महिला सभा' की स्थापना की थी। स्त्री शिक्षा के वे कट्टर समर्थक थे, फलस्वरुप उनका घर निःशुल्क कन्या पाठशाला के रुप में परिवर्तित हो गया था। वे सत्यवादी वकील थे, सदैव अत्याचारों से सन्त्रस्त निर्धन निहत्थों की ही वकालत करते रहे। महामारियों में पीडित जनता के वे सर्वप्रिय वैद्य थे। आयुर्वेद का उन्हें अच्छा ज्ञान था। हिन्दू-मुस्लिम, दलित-सवर्ण उनके दिये हुये निर्णय को अन्तिम मानते थे। वे वैर-वैमनस्य की धधकती अग्नि में कुशलता व निर्भीकता के साथ शान्ति प्रस्थापित करते थे। कट्टर आर्य समाजी व वैदिक धर्म के प्रचारक होने के बावजूद भी हिन्दू-मुस्लिम, जैन-बौद्ध, दलित-सवर्ण सभी उनके सामने श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते थे। इसका सबसे बडा कारण यही था कि वे कट्टर मानवतावादी थे। उन्होंने साम्प्रदायिक व जातिवाद की भावनाओं से ऊपर उठकर सदैव मित्रता की दृष्टि से मानवमात्र की सेवा की, इसलिये वे सबके मसीहा कहलाये। उनमें इन्सानियत का भाव सबसे प्रबल रहा। वे महामानव थे। सन् १९२१ से १९३८ तक का यह एक ऐसा काल था, जब जागृति के प्रत्येक मोर्चे पर भाई श्यामलाल जी खडे नजर आते थे।

भाई श्यामलालजी का जन्म

१९०३ ई. में बीदर जिले के अन्तर्गत भालकी गांव के ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हलीखेड में हुई तथा शेष शिक्षा गुलबर्गा में सम्पन्न हुई। १९२५ में आप वकील बनें और उदगीर आपकी कर्मभूमि हो गई। २३ दिसम्बर १९२६ को आर्य समाज के वीर संन्यासी, भारत के महान् राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हुआ। **'अग्निना अग्नि: समिध्यते।'** इसी बलिदानी व्यक्तित्व ने भाई श्यामलाल जी को उदगीर में **'आर्य समाज'** स्थापना करने की प्रेरणा दी। भाई श्यामलाल जी की रचनात्मक जनजागृति की गतिविधियों को देखकर रजाकार बौखला उठे और भाई जी को मारने के षड्यन्त्र शुरु हो गये। दो बार आपके घर पर आक्रमण किया गया, जो कि विफल रहा। होली के अवसर पर जब उदगीर में आर्य समाज का जुलूस निकला, तब दो रजाकारों ने आप पर आक्रमण किया परन्तु आप बाल-बाल बच गये। १९२८ में उदगीर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हुआ, तभी से पुलिस आपके पीछे लग गयी, पुलिस ने उन्हें डाके से लेकर कत्ल तक बीसियों झूठे अभियोग में फंसाकर आतंकित करने व उनकी वकालत की डिग्री जब्त करने की कोशिश की, पर सब कुछ विफल हुआ। वे तिलमात्र भी विचलित न हुये।

४ अप्रैल १९३१ ई.को आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य की स्थापना हुई। हैदराबाद हाईकोर्ट के जज श्रीयुत केशवराव कोरटकर प्रधान बनें और पं.श्यामलालजी वकील उपप्रधान चुने गए। १९३३ में आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य का द्वितीय निर्वाचन हुआ, जिसमें बैरिस्टर विनायकरावजी विद्यालंकार प्रधान और मन्त्री पं.भाई श्यामलालजी वकील चुने गये। उदगीर आर्य समाज के मन्त्री पद से आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के मन्त्री पद की यह यात्रा भाई श्यामलालजी की विलक्षण प्रतिभा एवं संगठन चातुर्य व निर्भीक व्यक्तित्त्व की परिचायक थी। उस समय आर्य समाज के पद सही अर्थों में कांटों के ताज थे। आर्य समाज का पदाधिकारी बनना, अपनी मौत को निमन्त्रण देने के बराबर था, पर भाई जी तो उन व्यक्तियों मे से जिनका एक मात्र तराना (गीत) होता है -

सर पे कफन लपेटे।
कातिल को ढूंढते हैं।।

शहीदों की पंक्ति में लानेवाला अमरत्व का वह क्षण धीरे-धीरे पास आने लगा।

आर्य काँग्रेस कार्यकारिणी सभा (सोलापूर-कैंप) के मन्त्री श्री शिवचन्द्र जी (जो ३ मार्च १९४२ को रजाकारों के आक्रमण से शहीद हो गये) ने निजाम सत्ता व अत्याचारों के सम्बन्ध में १६-१७ घटना स्थलों का दौरा कर जी रिपोर्ट

तैयार की, वह दिल को दहला देनेवाली है । इस रिपोर्ट के परिशिष्ट नं.३ पर भाई श्यामलाल जी से सम्बन्धित अनेक शासकीय ऑर्डरों की प्रतिलिपियां प्रकाशित की गई हैं, जिनमें से कुल दो प्रतियां इसलिये दी जा रही हैं कि पाठक इस बात का अनुमान लगा सकें कि भाई श्यामलाल जी पर सरकार की कितनी कठोर दृष्टि थी ।

अ) पं.श्यामलाल वकील जिला उदगीर से निलंगा तालुका अन्तर्गत कासार शिरसी के सब इन्सपैक्टर पुलिस सय्यद मुहम्मद अहमद ने पांच आर्दी वैहशत १३४२ फस्ली को निम्न प्रश्नों के उत्तर मांगे –

१) तुमने अपना उत्सव किसकी आज्ञा से मनाया है ? २) क्या तुम्हारे पास कोई आज्ञा पत्र है ? यदि है तो उसकी लिपि भेंजे । ३) तुम्हारे साथ के दो लडके कौन थे ? उनके नाम और पूरे पते हमारे पास भेजे? ४)यदि उत्सव के लिये तुमने आज्ञा प्राप्त की थी, तो लिखो कि वह किससे प्राप्त की थी?

आ) कलेक्टर का सब डिविजनल आफिसर के नाम गुप्त पत्र (२०–८–३४) संख्या ७४,१४ मेहर फसली (१३४३) की लिपि –

"निजाम साहब की प्रजा के कुछ लोगों ने हिन्दू महासभा के अधिवेशन में भाग लिया है । राज्य की आज्ञाओं के अनुसार सूचित किया जाना चाहिये कि यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार की राजनीतिक मिटिंगों में जायेगा, तो उसके साथ कडा सलूक किया जायेगा । हल्लीखेड के श्यामलाल वकील तथा उदगीर के बन्सीलाल वकील, जिन्होंने उपर्युक्त अधिवेशन में भाग लिया है । आपकी तहसील के हैं और उनके साथ लगभग ४० मरहटे भी अधिवेशन में गए थे । उन्हें सरकारी हुक्म की सूचना देकर उनके हस्ताक्षर प्राप्त किये जाय ।"

१९३६ ई. में माणिकनगर के मेले पर आयोजित आर्य समाज नगर कीर्तन में जब श्यामलाल जी शामिल हुये, तब पुलिस की उपस्थिति मे रजाकारों ने उनकी पीठ पर छुरे से प्रहार किया । अभी दूसरा वार श्यामलाल जी पर पडनेवाला ही था कि बाबूप्रसाद आर्य नामक युवक बीच में आ कूद पडा और उसने जटायू की तरह क्षत विक्षत होकर भाई पं.श्यामलालजी वकील की रक्षा की ।

समझा है खेल शहीदों ने,
अपना सर्वस्व लुटा देना ।
वीरों का यह मनोरंजन,
अपना अस्तित्व मिटा देना ।।

सन १९३८ विजयदशमी पर्व पर उदगीर में आर्य वीरों का जुलूस निकला ।

अभी जुलूस कुछ दूर ही गया था कि लाठी उठाये अत्याचारी जुलूस पर टूट पडे, दंगा समाप्त होने के पश्चात् सायं निरपराध भाई श्यामलाल जी को गिरफ्तार कर बीदर जेल भेज दिया गया । भाई श्यामलाल जी इस जेल से सजीव बाहर न आ सके । बस अकस्मात् १७ दिसम्बर १९३८ को यह दुःखद समाचार बिजली की तरह फैल गया कि, 'बीदर जेल में भाई श्यामलालजी का स्वर्गवास हो गया ।' कहा जाता है कि दूध में उन्हें विष दिया गया। जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गयी । श्याम भाई की शव परीक्षा करने वाले सोलापुर के प्रसिद्ध डॉक्टर श्री नीलकण्ठराव एल.एम.एस., के.एल.ओ.(बियाना) ने लिखा था - **पेट सिकुडकर पीठ से जा लगा था, हाथ के नाखून काले पड गये थे, दाई टांग के गट्टे के पास आध इंच घेरे का एक घाव था । बाई टांग पर भी एक लम्बा घाव था । अतः यह निःसंशय कहा जा सकता है कि उनकी मौत जेल के कठोर दुर्व्यवहार के कारण हुई ।**

इस प्रकार पं.भाई श्यामलालजी वकील हैदराबाद राज्य की आजादी के लिये अन्तिम श्वास तक संघर्ष करते हुए शहीद हो गये थे । राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में शहीद भगतसिंह के बलिदान ने जो जन जागृति उत्पन्न की, वही जन-जागृति हैदराबाद मुक्तिसंग्राम में भाई श्यामलाल जी के बलिदान से हुई । अस्तांचल की ओर जाते हुए जैसे सूर्य भगवान् अपनी किरणों से मेघों को रंग देता है, ठीक उसी प्रकार भाई श्यामलाल जी के तेजस्वी व्यक्तित्व ने निजाम राज्य की जनता को प्रभावित किया ।

(ऐसे वीर बलिदानी पं.भाई श्यामलालजी को ११२ वें स्मृतिवर्ष (१९०३-२०१५) पर शत् शत् प्रणाम । उनका व्यक्तित्व हमें सदैव हर अन्याय अन्धकार से टकराने की प्रेरणा देता रहेगा

विद्यार्थी सहाय्यता निधि - आवेदन पत्र हेतु सूचना

डॉ. तानाजी आचार्य (लंदन) की प्रेरणा से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में असहाय्य छात्रों के लिए मानवदत्तक योजना कार्यान्वित है । इसके अनुसार समाज के गरीब परिवारों में अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिए आर्थिक सहाय्यता की जाती है । अतः जो बुद्धिमान छात्र धन के अभाव में पढ नही पाते । ऐसे छात्रों एवं उनके अभिभावकों से निवेदन है कि वे स्वानीय आर्य समाजों द्वारा सभा को आवेदन पत्र भेजें और इस सहाय्यता निधी लाभ उठावें । - **सभामन्त्री**

रक्तसाक्षी हुतात्मा वेदप्रकाशजी

– प्रा.राजेंद्र जिज्ञासु

आर्य समाज के रक्तरंजित इतिहास में वीरवर वेदप्रकाश के बलिदान का एक ऐतिहासिक महत्त्व है।

वीर वेदप्रकाश को जन्म के समय माता-पिता ने दासप्पा नाम दिया था । आपका जन्म फाल्गुण शुक्ला ५ शाके संवत् १८२७ को श्री शिवबसप्पा के घर गंजोटी जिला धाराशिव(उस्मानाबाद) में हुआ । आपकी माता का नाम रेवतीबाई था । आपने मराठी की सातवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की । गुंजोटी में आर्यसमाज के आरम्भ से ही कुशल व सक्रिय कायकर्त्ता मिलते रहे हैं । वास्तव में वीर वेदप्रकाश ही आर्य समाज गुंजोटी के संस्थापक थे । आर्यसमाज के प्रचार से स्थानीय मुसलमान व अधिकारी बहुत चिढते थे। वेदप्रकाश आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित होकर लोग आर्यसमाज के सत्संगों मे नियमपूर्वक भाग लेने लगे ।

अब आपने अपना नाम बदलकर **वेदप्रकाश** रख लिया । इनके उत्साह से आर्यसमाज का संगठन और सुदृढ हो गया । आपके बलिदान के समय आर्य बनने के पश्चात् ही गुंजोटी में आर्यसमाज की शाखा स्थापित हुई, ऐसा नहीं है । आर्यसमाज तो वहाँ कुछ समय पहले ही स्थापित हो चुका था । वेदप्रकाश लाठी तलवार चलाने में बहुत निपुण थे ।

छोटू खां नाम के एक पठान को आपने कहा – **परस्त्री को बुरी दृष्टि से मत देखा करें** । इस कारण छोटू खां व अन्य मुसलमान वेदप्रकाशजी व अन्य आर्यों के शत्रु बन गये । हिन्दुओं को सौदा देना बन्द कर दिया । महाराष्ट्र में पान का बहुत प्रचलन है । वेदप्रकाशजी ने पान की दुकान खोलकर हिन्दुओं की माँग को पूरा किया । चाँद नाम का पानविक्रेता इससे जलभुन गया । वेदप्रकाशजी पर कई बार जानलेवा आक्रमण हुए, परन्तु अपनी वीरता से वह हर बार बच गये ।

चार मार्गशीर्ष सन् १९९४ को पुलिस अधिकारियों ने प्रतिष्ठित हिन्दुओं

को बुलवाकर थाने में बिठा दिया और पीछे से मुलसमानों से हिन्दुओं पर आक्रमण करवा दिया । आर्यसमाज के मन्त्री के घर पर भी आक्रमण किया गया । सूचना पाकर वेदप्रकाशजी उनके घर की ओर दौड पडे । सैकडों सशस्त्र मुसलमानों ने निहत्थे आर्यवीर की ओर दौड पडे। सैकडों सशस्त्र मुसलमानों ने निहत्थे आर्यवीर को घेर लिया और आठ-नौ दुष्टों ने उसे मार गिराया । वीर वेदप्रकाश की निर्ममता से हत्या कर दी गई । आक्रमणकारियों ने मुसलमान बन जाने पर उसे छोड देने का आश्वासन दिया, परन्तु आपने बडी दृढता व शूरता से वैदिक धर्म पर प्राण निछावर करके अपने नाम को सार्थक कर दिया ।

वेदप्रकाशजी के हत्यारे पहचान लिये गये । साक्षी भी मिल गये, परन्तु न्याय का नाटक करते हुए हैदराबाद के इस्लामी न्यायालय ने हत्यारों को निर्दोष घोषित करके छोड दिया । आर्यों ने वेदप्रकाश दिवस मनाया । वेदप्रकाशजी ने बलिदान यज्ञ में आहुति देकर इसे प्रचंड किया । आपके पीछे बलिदान देनेवालों का ताँता ही लग गया । पं.श्री नरेन्द्रजी ने भावभरित हृदय से लिखा है - **सहर्ष आत्मोत्सर्ग करनेवाले वीर हकीकतराय के बाद भारत के इतिहास में यदि किसी का नाम लिया जा सकता है, तो वह वेदप्रकाश ही थे।**

श्री भाई बंशीलालजी व देशबन्धुजी औराद तत्काल गुंजोटी पहुँच गये । परिस्थितियाँ बहुत विकट थीं । वीर का दाहकर्म करने में भी बाधायें डाली गईं । हिन्दुओं ने बहुत जोश व श्रद्धा से धर्मवीर वेदप्रकाश कही अन्त्येष्टि की व्यवस्था की । यह भी स्मरण रहे कि निजामी सरकार ने बहुत ही निर्लज्जता से यह प्रचार कि वेदप्रकाश तो आर्य समाजी था ही नहीं, तब आर्य समाज ने सरकार के इस मिथ्या प्रचार का सप्रमाण प्रतिवाद किया ।

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध पत्रकार व विद्वान् पं.श्री त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री ने तब सोलापुर(गुंजोटी के समीप ही है) से **वैदिक सन्देश** साप्ताहिक में हुतात्मा के बलिदान का विस्तृत समाचार दे हुए निम्न कविता भी प्रकाशित की थी -

- गिरिसा अटल है-

विचलित होता जो न विघ्न बाधा देखकर,
रहता विपत्ति में जो गिरि सा अटल है ।
कर्मक्षेत्र में जो बढता है, धीर धार उर,
ध्येय है अटल, दृढवीर जो प्रबल है ।।
सर्व सुख छोडकर, संकट लगावे गले,
कष्टों का समूह जिसे करे न विचल है ।
पुत्रवती माता उसकी ही जग में है धन्य,
जीवन उसी का होता, जग में सफल है ।।

(रक्तरंजित है कहानी - ग्रन्थ से साभार)

सिडनी का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

–वैद्य विज्ञानमुनिजी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य समाज सिडनी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन बहुतही सफल रहा । आर्य समाज केंद्र ६, शान ए पार्क, सिडनी के निकट दि. २७,२८,२९ नवम्बर २०१५ को आयोजित इस महासम्मेलन में देश व विदेश से पधारे आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने वैदिक विचारधारा को समग्र विश्व में फैलाने का शुभसंकल्प लिया । सम्मेलन में भारत, मॉरीसस, सिंगापुर, अमेरिका, कॅनडा, ब्रिसबेन, मेल्बर्न, सुरिनाम, फिजी, न्युझीलंड, इंग्लेण्ड, नेपाल एवं ऑस्ट्रेलिया आदि देशों से पधारे लगभग ९०० आर्यजनों ने भाग लिया । दिल्ली (भारत) से सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सुरेशचंद्र अग्रवाल, मंत्री श्री प्रकाश आर्य के नेतृत्व में लगभग १५० आर्यजनों का दल सिडनी पहुंचा । महाराष्ट्र से प्रान्तीय सभा के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी, कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर, सौ. सावित्रीदेवी राठौर एवं वैद्य श्री विज्ञानमुनिजी भी सिडनी पहुंचे। सम्मेलन में भाग लेनेवाले अन्य कार्यकर्त्ताओं में सर्वश्री डॉ. सतीश प्रकाश, पं. गुरूदत्त, प्रियंका शर्मा, आचार्य आनंद प्रकाशजी, दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य, आचार्य सनत्कुमारजी, आचार्य योगेशकुमार, डॉ. नवीनकुमारजी, आचार्य आशीषजी, सांसद श्री सत्यपालसिंहजी, देवेंद्रपालजी वर्मा, स्वामी संपूर्णानन्दजी, आचार्य ब्र.नंदकिशोरजी आदियों का समावेश था । इन सभी का ऑस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जोरदार स्वागत किया गया ।

तीनों दिन प्रातः दोपहर, सायं तथा रात्री में कार्यक्रम होते रहे । प्रतिदिन योगशिविर, वेदपारायण यज्ञ तथा विद्वानों व आर्य युवा कार्यकर्त्ताओं के भाषण होते रहे । प्रथम सत्र में आचार्य श्री आनंदप्रकाशजी ईश्वर की मान्यताओं व उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला । उन्होंने बताया कि ईश्वर पुरूषार्थी भक्तों को ही सहायता करता है । अलसियों को कदापि नहीं । उन्होंने **कस्मै देवाय हविषा विधेम** । इस मंत्रांश की सुंदर व्याख्या की । दूसरे सत्र में पं. गुरूदत्तजी (फिजी) **आर्य नेता व कार्यकर्त्ता कैसा हो** ? इस विषयपर अपने विचार रखें । इस सत्र की अध्यक्षता महाराष्ट्र सभा के प्रधान श्री डॉ. ब्रह्ममुनिजीने की । श्री गुरूदत्तजी ने कहा – आर्यनेताओं को बहुतसारा समय समाज के नवनिर्माण तथा वैदिक धर्म के प्रचार के लिये देना चाहिए।

पूरी तरह से मिशनरी भाव से अहर्निश काम करनेवाला कार्यकर्त्ता ही सही अर्थों में **नेता** माना जाता है । आर्यनेताओं को निंदास्तुति से दूर रहकर उदारहृदय से ऋषि के सपनों को साकार करने हेतु समय देना आवश्यक है । नेता बनना हो तो पहले स्वयं के जवन में पूरी तरह से सिद्धान्तों को उतारना होगा । अध्यक्षीय भाषण में डॉ. ब्रह्ममुनिजी ने कहा – नेता बनना हो, तो महर्षि स्वामी दयानंद की ओर देखो । उन्होंने कडी तपस्यांद्वारा हमें वेदज्ञान प्रदान किया । उसी भावना से नेताओं को प्रचार क्षेत्र में उतरना चाहिये । ईश्वर ने सारे संसार को वेदज्ञान दिया और वह भी मानवमात्र के कल्याण के लिये ! इसलिये ईश्वर की इस अमृतवाणी को विश्व कें कोने-कोने तक पहुंचाने में हमें सदैव अग्रणी रहना चाहिये । राजनेताओं के समान दिखावटी न बनकर आर्यनेताओं को सदाचारी, न्यायवादी, निष्पक्ष, प्रखर सिद्धांतवादी तथा तपस्वी बनना चाहिए । उनमें त्याग, तपश्चार्या, प्रयत्नवादिता आदि गुण होने चाहिए । जब इस प्रकार के आर्यनेता इस देश में उत्पन्न होंगें, तब **आयराष्ट्र** बनने में देर नहीं लगेगी ।

अन्य सत्रों में सार्वदेशिक के मंत्री श्री प्रकाशजी आर्य, दिल्ली के मंत्री श्री विनयजी आर्य, पूर्व पुलिस कमीशनर व सांसद श्री सत्यपालसिंहजी आदियों ने 'आर्य संगठन, वेदप्रचार, शिक्षासुधार, राष्ट्रनिर्माण, संस्कृति रक्षा' आदि विषयोंपर अपने विचार रखें । सिडनी के आर्य कार्यकर्त्ताओं तथा आर्ययुवकों ने भी इस महासम्मेलन में अपने ओजस्वी विचार रखे । सम्मेलन की सारी जिम्मेदारी युवा कार्यकर्त्ताओं पर ही थी, जिसे देखकर श्रोताओं में उत्साहभरा वातावरण देखने मिलता था ।

सम्मेलन में भोजन, निवास आदि की व्यवस्था बहुतही उत्तम प्रकार से गई थी । मौसम को देखते हुए सभी के स्वास्थ्य का ध्यान रखा गया । विदेशों से पधारे आर्यजनों के लिये सिडनी के पर्यटन स्थलों को देखने की व्यवस्था भी गई थी । समुद्री जहाज से भ्रमण तथा स्थानीय सिडनी टॉवर, ब्लू माऊण्टेन, हारबोर ब्रीज तथा अन्य पर्यटन स्थलों कों देखने का सुअवसर आर्यो को प्राप्त हुआ । यहां के सभी स्थान दर्शनीय है । साथ ही वातावरण भी बहुतही सुंदर है । मौसम साधारणतः भारत देश के समान ही समशीतोष्ण रहता है । यहां के आर्यजनों ने हम सभी की भोजनादि की व्यवस्था व आतिथ्य आदरपूर्वक किया गया, जिसे भुलाया जाना कठिन है ।

इस तरह वैदिक विचारों को संसार में फैलाने के उद्देश्य को लेकर सिडनी का यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन काफी सफल रहा । अन्तिम सत्र में आगामी वर्ष २०१६ में अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन नेपाल

देश आयोजित करने की घोषणा की गई ।

ईश्वर की कृपा से हमारी सिडनी यात्रा बहुतही सफल रही । जाते समय हैदराबाद होते हुए हम रेलसे चेन्नई पहुंचे । वहां के प्रधान श्री जोशीजी एवं अन्य कार्यकर्त्ताओं ने हमारा आदरपूर्वक स्वागत किया व वायुयान से सिडनी के लिये हमें रवाना किया । चेन्नई में बहुतही भारी वर्षा के कारण सर्वत्र पानी ही पानी हो गया था । ऐसे स्थिति में भी हम कुशलतापूर्वक सिडनी पहुंचे । आते समय भी उसी तरह की घमासान वर्षा होने के कारण हमारी विमान यात्रा में बहुत दिक्कतें आई । जब सिडनी से हांगकांग होते हुए हमारा वायुयान चेन्नई को ओर बढने लगा, तब पाईलट को चेन्नई हवाई अड्डे पर न उतरने की सूचना मिली और हमारा वायुयान वापिस हांगकांग की ओर लौटने लगा तब हम बहुतही घबरा गये । मुझे तो मृत्यु का सा डर महसूस होने लगा । इधर महाराष्ट्र के परिजन, काले परिवार आदि भी हमारा संपर्क टूटने से घबरा गये । लेकिन जब उन्हें हमारी कुशलता का संदेश मिला, तब सभी संतुष्ट हो गये । विमान कंपनी के प्रयासों से हम मुंबई पहुंचे और वहां से निजी वाहन द्वारा परली (महाराष्ट्र) पहुंचे । ईश्वर की दया से हमारा सिडनी यात्रा व आर्यमहासम्मेलन में पहुंचना बहुतही सफल एवं निर्विघ्नपूर्ण रहा । एतदर्थ ईश्वर के प्रति श्रद्धावनत धन्यवाद !

– श्रद्धानंद गुरूकुल आश्रम,
परली–वै. /मो. ९९७५३७५७११

सभाद्वारा आर्य सेवक स्थिरनिधि स्थापना हेतु अपील

जिन आर्य विभूतियों ने अपने जीवन में वैदिक सिद्धान्तों का पालन करते हुए समाज के सम्मुख एक प्रखर आर्य समाजी होने का आदर्श रखा है, ऐसे महाराष्ट्र के लगभग १८ आर्यसेवकों का गौरव करने का निश्चय महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने लिया है । इनमें कई लोग दिवगंत हो चुके हैं, तो कई इस समय जीवित हैं । इन आर्य सत्पुरूषों के जीवन व कार्य का सम्मुचित सम्मान हो तथा समाज के सम्मुख उनका आदर्श प्रस्थापित हो, जिससे कि भविष्य में आर्यसमाज का प्रचार व प्रसार होने में काफी मदत मिल सकती है ।

अतः इनके गौरव में वेदप्रचार हेतु स्थापित होनेवाले स्थिरनिधियों को पूर्ण करने हेतु उनके सम्बन्धी, मित्रजन एवं परिवार के लोग अधिक से अधिक लोग प्रयत्न करें । इन गौरवमूर्तियों का सम्मान आगामी मार्च में होनेवाले आर्य समाज गांधी चौक, लातूर के वार्षिकोत्सव में होगा । अतः सभी दानदाता उदारभावसे अपनी दानराशियां प्रदान कर सहयोग करें । **–सभामंत्री**

समाचार दर्पण

परली में वेदप्रचार उत्सव सम्पन्न

'ईश्वर का सामर्थ्य अनन्त है । वह अनन्त ज्ञान हमें वेद के माध्यम से मिला है । बुद्ध पर पडे अन्धःकार रूप परदे को यदि हम वेदज्ञानरूपी सूर्य द्वारा हटाते हैं, तो जीवन में शाश्वत आनन्द व सुख की उपलब्धि हो सकती है । अन्यथा जन्म - जन्मान्तरों के शुभ संस्कारों से मिला यह मानवजीवन यूं ही व्यर्थ चला जाएगा ।' ये विचार थे जानेमाने वैदिक विद्वान पं. सत्येन्द्रसिंहजी आर्य के । प्रान्तीय सभा के तत्त्वावधान में आर्य समाज परली में दि. २३ से २९ अगस्त तक आयोजित श्रावणी वेदसप्ताह के समापन अवसर पर श्री आर्य मार्गदर्शन कर रहे थे । वेदसप्ताह के दौरान पण्डितजी के विभिन्न विषयों पर मौलिक व्याख्यान सम्पन्न हुए । आर्य भजनोपदशेक पं. सन्दीपजी आर्य ने अपने मधुर भजनोंद्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया । प्रातः ७.३० से १० बजे तक वेदपारायण भजनोंपदेश तथा प्रवचन एवं रात्रि में सामाजिक, राष्ट्रीय, सामाजिक विषयोंपर व्याख्यान सम्पन्न हुए । वेदपारायण यज्ञ में परली के प्रतिष्ठित आर्य व्यापारी, चिकित्सक, अध्यापक, सम्मिलित हुए थे । अन्तिम दिन प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया एवं मंत्री श्री उग्रसेन राठौर दम्पती की उपस्थिति में वेदपारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई । श्री लोहिया परिवार द्वारा महाप्रसाद का आयोजन हुआ ।

रामनगर में श्रोताओं की भीड उमड पडी ।

'ऋषिवर देव दयानन्द ने संसार के लोगों को वेदविज्ञान की वह कुंजी प्रदान की, जिससे पुरानी, कुरानी, ख्रिस्ती, जैनी, बुद्धीष्ट, पारसी आदि मतों की पोल खुल गयी और मानवमात्र को सुख से जीने के आनन्दभण्डार के द्वार खुल गये ।' यह विचार वैदिक प्रवक्ता पं. महेन्द्रपालजी आर्य ने रामनगर (लातूर) की आर्य समाज के श्रावणी वेदप्रचार उत्सव में रखे ।

प्रान्तीय सभा द्वारा आयोजित यह उत्सव दि. २३ से २९ अगस्त तक उल्लासपूर्वक मनाया गया । भजनोपदेशक पं. सुखपालजी आर्य ने अपने भजनोंद्वारा उपस्थित श्रोताओं को प्रेरणा प्रदान की । प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, भजनोपदेश व प्रवचन तथा रात्रि में भजन व व्याख्यान सम्पन्न होते रहें । दोनों सत्रों में विद्वानों के विचार सुनने हेतु श्रोताओं की संख्या बढती गई । आर्य समाज का भवन भी श्रोताओं को बैठने के लिए अपूरा पडता रहा ।

इस वेदप्रचार पर्व की सफलता हेतु प्रधान श्री शंकरराव मोरे, मंत्री ज्ञानकुमारजी आर्य, कोषाध्यक्ष राजेन्द्रजी दिवे तथा कार्यकर्त्ताओं ने प्रयास किये ।

स्वामी अमृतानंदजी के सान्निध्य में

तीन स्थानों पर 'ध्यानयोग शिविर' का आयोजन

आध्यात्मिक जीवन साधना तथा योग के माध्यम से समस्त दुःखों का निवारण होकर शाश्वत सुख की उपलब्धी हो, इस उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में राज्य के चार स्थानों पर

क्रियात्मक ध्यानयोग शिविर का आयोजन किया जा रहा है । प्रसिद्ध योगप्रचारक पू. स्वामी अमृतानन्दजी सरस्वती के सान्निध्य में सम्पन्न हो रहे इन शिविरों के कार्यक्रम इस प्रकार से हैं ।

कार्यक्रम विवरण

१)आर्य समाज,रामनगर लातूर	–	दि. १७ से २४ जनवरी २०१६
२)आर्य समाज,निलंगा	–	दि. २५ से ३१ जनवरी २०१६
३)आर्य समाज,औराद शहा.	–	दि. १ से ७ फरवरी २०१६

उपरोक्त आर्य समाजें इन शिविरों को सफलतापूर्वक आयोजन करें । योगीप्रेमी व अध्यात्मप्रेमी महानुभाव इन शिविरों में सम्मिलित होवें ।

संपर्क * –

रामनगर, लातूर के लिये –

१) शंकरराव मोरे ९४२२४६८२२८

२) ज्ञानकुमारजी आर्य ९६२३८४२२४०

३) राजेंद्र दिवे ९८२२३६५२७२

*** निलंगा के लिये –**

१) शाहीर ९४०५८५१४८१

२) ओमप्रकाश वाघमारे

*** औराद शहाजानी के लिये –**

१) डॉ. प्रकाश कच्छवा ९४२०८७०१२४

२) गोविंदराव भिंगोले ८२७५९२५४१९

३) भरत बियाणी ९४२२३७१५०४

जमानी आश्रम का वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी संस्था परोपकारिणी सभा अजमेर के निर्देशन में इटारसी (म.प्र.) परिसर में स्थापित आर्य आश्रम जमानी का वार्षिकोत्सव आगामी दि. १२ से १४ जनवरी २०१६ को धूमधाम के साथ मनाया जाएगा । इस उत्सव में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. धर्मवीरजी , आचार्य सोमदेवजी, आचार्य कर्मवीरजी आदि मार्गदर्शन करेंगे । अतः इस वार्षिकोत्सव में पधारने का आवाहन आश्रम के आचार्य ब्र.श्री सत्यप्रियजी (७५०९७०६८२८) ने किया है ।

वेलानी परिवार में 'माताजी' का जन्मदिवस

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि के उपमन्त्री श्री लखमसीभाई वेलानी की वयोवृद्धा माताजी श्रीमती केशरदेवी वेलानी का ९६ वां जन्मदिवस दि. १९ नवम्बर २०१५ को बडे उत्साह के साथ मनाया गया । इस उपलक्ष्य में **मातृवन्दना कार्यक्रम** का आयोजन किया गया । सभा के उपदेशक श्री पं. सुधाकरजी शास्त्री के पौरोहित्य यज्ञ हुआ । जिसमे यजमान दम्पत्ती सौ. जयाबेन व श्री देवजीभाई वेलानी, सौ. लीलावती व श्री लखमसीभाई वेलानी सम्मिलित हुए । वेलानी परिवार के सभी छोटे बडे सदस्यों ने श्रद्धा के साथ यज्ञ में आहुतियां प्रदान की । वैदिक विद्वान पं. सुधाकरजी, पं. योगेशजी तथा पं. गणेशजी आर्य ने इस अवसर पर श्रोताओं को **मातृमहत्ता** विषय पर सम्बोधित किया तथा भजन भी गाये । माताजी के करकमलों से १०० दीप प्रज्वलित किये गये तब वैदिक मन्त्रोचारण पूर्वक सभी ने उनके शतायु की कामना की । तत्पश्चात् बच्चों ने मातृवन्दना गीत एवं कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये । इस अवसर पर वेलानी परिवार की ओर से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के लिऐ वेदप्रचार हेतु रू. ५० हजार तथा परोपकारिणी सभा के लिए एक लाख रूपयों के दान की घोषणा की गयी । इस सारोह में पुणे की आर्य समाजों के सदस्यगण सम्मिलित हुए ।

छात्रों के नवनिर्माण के लिए वेदप्रचार वाहन रवाना

जगह-जगह वैदिक विद्वानों के व्याख्यान

महाराष्ट्र सभा ने स्कूल व कॉलेजों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में वैदिक विचारों के प्रसार हेतु दि. १ दिसम्बर से वैदिक व्याख्यानमाला अभियान सुरू किया है । प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सभा ने इस उपक्रम को जारी रखा । टाटा सुमो जीपवाहन पर बैनर व ध्वज लगाकर, साथ में वैदिक साहित्य व महर्षि दयानन्द की प्रतिमाएं, माईक सिस्टम लेकर बच्चों में मानवीय मूल्यों की जागृति कराने के उद्देश्य से वैदिक विद्वानों का मण्डल चल पडा । मुख्य वक्ता के रूप में दि. १ से १० दिसम्बर तक सभा उपदेशक पं. सुधाकर शास्त्री तथा दि. ११ से १४ तक पं. नारायणराव कुलकर्णी (मंत्री आर्य समाज, नांदेड) वाहन के साथ रहे । तत्पश्चात् दि. १५ दिसम्बर से गाजियाबाद (उ.प्र.) से आमन्त्रित वैदिक विद्वान पं. ब्रिजेशजी शास्त्री प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में संलग्न हैं । साथ ही श्री

आर्यमुनिजी के प्रवचन व प्रतापसिंहजी चौहान के जीवनोपयोगी गीत व भजन सम्पन्न होते रहे। पुस्तक वितरण का दायित्व श्री दत्तात्रय गित्ते ने सम्भाल रहे हैं। १ दिसम्बर को प्रातः सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य ने ओ३म् ध्वज दिखाकर इस प्रचार वाहन को विदा किया। इस अवसर पर आर्य समाज परली के कोषाध्यक्ष प्रभुलालजी गोहिल,रंगनाथजी तिवारी, नयनकुमार आचार्य, कर्ममुनिजी, शिवाजी निले, अभय तिवार उपस्थित थे।

वक्तृत्व स्पर्धा में परली की छात्राएं विजेत्री

प्रान्तीय आर्य सभा के तत्वावधान में आर्य समाज, परभणी द्वारा इस वर्ष की स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा दि. २९ नवम्बर २०१५ को सम्पन्न हुई। **'आधुनिक युग के वैदिक क्रान्तिसूर्य महर्षि दयानन्द'** इस विषय पर प्रतिभागियों ने अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत किये। इस प्रतियोगिता में परली वैजनाथ स्थित न्यू हायस्कूल की तीनों छात्राओं विजय सम्पादन किया। कु. शिवानी ज्ञानोबा चाटे ने प्रथम स्थान पाकर रू. १५००/- का प्रथम पुरस्कार हासिल किया, जब कि कु. साक्षी विकासराव कुलकर्णी ने द्वितीय (रू. ११००/-) तथा कु. नेहा ज्ञानेश्वर धोंडगे (रू. ७००/-) पुरस्कार प्राप्त किये। तीनों विजेत्रियों को पुरस्कार राशियां, प्रमाणपत्र एवं वैदिक साहित्य प्रदान किये गये।

इस भाषण प्रतियोगिता में निर्णायक रूप में पं. दिगम्बर शास्त्री (देवकते) पं. सुरेश शास्त्री (मुण्डे) एवं सौ. लीलावती राजेन्द्र जगदाले ने कार्य किया। वेदप्रचार अधिष्ठाता पं. लक्ष्मणराव आर्य, आर्य समाज परभणी के प्रधान विजयकुमार अग्रवाल, मंत्री डॉ. धनंजय औंढेकर, बाबुराव आर्य, मधुकर पांचाळ आदि उपस्थित थे।

गुरूकुल झज्जर का शताब्दी महोत्सव

आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय झज्जर इस वर्ष अपनी स्थापना का शताब्दी महोत्सव मनाने जा रहा है। यह शताब्दी समारोह १२ व १३ मार्च २०१६ को हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न होगा, जिसमें आर्य जगत् के उच्च कोटी के संन्यासी, राजनेतागण, वैदिक विद्वान, भजनोपदेशक आदि भाग लेंगें। इस उपलक्ष्य में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, व्यायाम प्रदर्शन तथा समारोह होंगें। अतः इस शताब्दी महोत्सव में आर्य जनों विशेषकर गुरूकुल के स्नातकों से सम्मिलित होने का अनुरोध गुरूकुल के प्रधानाचार्य स्वामी विजयपालजी ने किया है।

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

सुभाषित सन्देश

पंडिताचे लक्षण

आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता ।
यमर्था नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ।। (महाभारत-उद्योगपर्व)

ज्याला आत्मज्ञान झालेले आहे, जो सम्यक् आरंभ म्हणजे नित्य उद्योगात असतो. कधीही रिकामटेकडा व आळशी राहत नाही, सुख-दुःख, हानि-लाभ, मानापमान, निंदा-स्तुती यांविषयी जो कधी हर्ष अथवा शोक करीत नाही, जो नेहमी धर्माचरणात मग्न असतो. ज्याच्या मनाला उत्तमोत्तम पदार्थ म्हणजे विषयवासनांच्या वस्तू आकर्षित करीत नाहीत, त्यालाच 'पंडित' असे म्हणतात.

दयानंदांची अमृतवाणी

ईश्वराची मूर्ती नाहीच !

ज्याअर्थी परमेश्वर निराकार व सर्वव्यापक आहे, त्याअर्थी त्याची मूर्ती बनूच शकत नाही आणि जर केवळ मूर्तीच्या दर्शनाने परमेश्वराचे स्मरण होत असेल, तर परमेश्वराने निर्माण केलेली पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायू, वनस्पती वगैरे वस्तूंच्या अद्‌भुत रचना पाहून ईश्वराचे स्मरण होणार नाही काय ? ज्या डोंगरातून माणूस मूर्ती घडवितो, ते डोंगर पृथ्वी याच परमेश्वराने बनविलेल्या महामूर्ती आहेत. त्या पाहून परमेश्वराचे स्मरण होऊ शकणार नाही काय ? शिवाय मूर्ती पाहिल्यानंतर परमेश्वराचे स्मरण होते, असे जे तुम्ही म्हणता ते पूर्णपणे खोटे आहे. कारण जेव्हा मूर्ती समोर नसेल तेव्हा परमेश्वराचे स्मरण न झाल्याने माणूस एकांत मिळताच चोरी, जारी वगैरे दुष्कृत्ये करण्यास प्रवृत्त होईल. समोर मूर्ती नसल्यामुळे आपल्याला कोणी पाहत नाही, असे त्याला वाटेल आणि तो वाटेल ते कुकर्म करील. अशा प्रकारे पाषाणादीकांच्या मूर्तीची पूजा करण्यात अनेक दोष आहेत, असे सिद्ध होते.

(महर्षी दयानंद रचित सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)

(मूळ इंग्रजी लेखाचा अनुवाद)

यज्ञाविषयी वैज्ञानिक संशोधन व निष्कर्ष

लेखिका-प्रो.डॉ.रस्तौगी/अनुवादक-प्रा.शरदचंद्र डुमणे (निवृत्त अधिव्याख्याते)

भारतीय संस्कृतीत वेदाचे अनन्यसाधारण महत्व आहे. वेदातील अध्यात्मविज्ञानाचे आदर्श आणि व्यावहारिक विश्लेषण मानवजातीसाठी उपयोगी ठरते परंतु मूर्ख आणि धूर्त लोकांनी अज्ञान, अंधश्रद्धा व स्वार्थभावनेतून याचा दुरूपयोग केल्यामुळे त्यांचे सत्यस्वरूप लोप पावलेले दिसते. याचा उलगडा महर्षी दयानंद सरस्वतींनी त्यांच्या अमरग्रंथ **सत्यार्थप्रकाश**मध्ये केल्याचे दिसते। – **संपादक**

अजमेरच्या जे.एल. एन. वैद्यकीय महाविद्यालय व संलग्न रूणालयाच्या सूक्ष्मजीव शास्त्र विभागाच्या प्राध्यापकांनी जुलै २०११ मध्ये यज्ञाच्या पर्यावरणावरील परिणामांविषयी प्रयोग करून खालील अहवाल सादर केला आहे. तो याप्रमाणे : वैद्यकीय चिकित्सा शास्त्रामध्ये फार वेगाने प्रगती होत आहे व नव-नवीन तंत्रज्ञान प्रगत होत आहे. यामुळे मानवाचे आयुष्यमान वाढले आहे, हे निश्चित ! पण रूग्णालयातील वास्तव्य, प्रतिजैविकांचा वापर प्रतिकारशक्तीचा ऱ्हास करणारा औषधोपचार या सर्वांमुळे आजपावेतो अनभिज्ञ अशा सूक्ष्म रोग जीवाणूंचा रूग्ण आपोआप भक्ष्य बनतो आहे. यावर विचार होत नाही.

रूग्णालयातील वातावरणामध्ये होऊ घातलेल्या संसर्ग वाढीवरच आहे. अशा परिस्थितीमध्ये सर्व वैज्ञानिक हे एखाद्या परंपरेवर आधारित स्वस्त, सामाजिकदृष्टच्या मान्य, पर्यावरण मित्र असलेली पर्यायी उपाययोजना उपलब्ध होऊ शकतील काय ? याचा विचार करीत आहेत. या उपचार पद्धतीमुळे रूग्णालयातील संसर्गजन्य वातावरण नियंत्रणात येऊ शकेल, असे पण त्यांना वाटते.

मोठ्या अभिमानाने सांगावे वाटत आहे की, यज्ञ अथवा हवन हे वैदिक पद्धतीने सुचविलेले कर्म आहे. हे यज्ञ या सर्व समस्यांवर तोडगा होऊ शकेल, हे प्रयोगाद्वारे सिद्ध करण्यात यश आले आहे. एवढेच नव्हे तर रूग्णांची रोग प्रतिकारक शक्ती पण वाढविण्यात यज्ञ साह्य करतो हे

सिद्ध झाले आहे.

१९ जुलै २०११ रोजी आम्ही स्वामी कृष्णानंदजी यांच्या मार्गदर्शनाखाली व कुलगुरू, राजस्थान विद्यापीठ डॉ. पंवर यांच्या परवानगीने सूक्ष्मजीव शास्त्र विभागामध्ये प्रयोग केला. याचा उद्देश यज्ञामुळे वातावरणावर किती प्रमाणात हानीकारक जंतूवर प्रभाव होता, हे पाहणे व अभ्यासणे असा होता.

आम्ही वातावरणीय वायुचे तीन नमुने घेतले एक हवनापूर्वी, एक हवन चालू असतांना व एक हवन संपल्यानंतर (हवन जवळ-जवळ दीड तास चालू होते) सर्व प्रक्रिया वैज्ञानिक पद्धतीनुसार करण्यात आल्या. ज्यामध्ये आधुनिक पद्धतीच्या चाचण्या समाविष्ट होत्या. या चाचण्यांचा परिणाम कळविण्यात आम्हाला आनंद वाटतो की, या यज्ञामुळे जंतूंची पातळी ७५ ते ८० टक्के खाली आली. (हवनानंतर लगेच) हीच पातळी दीड तासांपर्यंत कायम राहिली. ग्रॅम निगेटिव्ह बॅक्टेरिया ५० टक्क्यांपर्यंत नष्ट झाले व ग्रॅम पॉझिटिव्ह बॅक्टेरिया १०० टक्के नष्ट झाले. सोबतचे कोकॉयमधील प्रोटीअस हे जंतू पण पूर्णपणे नष्ट झाले. यासाठी वेळ खर्च केला गेला तो पंचेचाळीस मिनिटे ! हवनाचे निष्कर्ष असा की आपली प्राचीन यज्ञपद्धती ही रूग्णालयजन्य संसर्ग कमी करण्यासाठी अर्थात रोगकारक जंतूंचा नायनाट करण्यासाठी यशस्वीरित्या वापरली जाऊ शकते. याबद्दल ही सांगायचे आहे की, हे सर्व शोध प्राथमिक स्वरूपाचे आहेत. आणखीन सखोल संशोधन झाल्यास याचे निश्चितीकरण होईल व उपयुक्तता वाढेलच, यात शंका नाही.

-सिग्नल कँप, देशी केंद्र शाळेमागे,
लातूर /मो. ९४२०४३४६२३

श्रीमती मायर विधवा महिला सहाय्यता -आवेदन सूचना

पूज्या स्व. श्रीमती शान्तिदेवी मायर (मिडैक्स-लन्दन) द्वारा विधवा महिलाओं के उत्थान के लिए सभा में **श्रीमती शान्तिदेवी विधवा महिला सहाय्यता स्थिरनिधि** स्थापित की थी । जिसके ब्याज से विधवा महिलाओं को आर्थिक सहाय्यता मिलती रहें । शर्त है की वह महिला भूमिहीन, नौकरी न करनेवाली, पुनर्विवाह न करनेवाली, पेन्शन न पानेवाली, अपनी मकान का किराया प्राप्त न करनेवाली हो । साथ ही वह अत्यन्त गरीब व मजदूरी करके आजीविका चलानेवाली तथा बच्चोंवाली हो, उसे किसी जाति, पन्थ या मजहब का बन्धन नहीं है ।

अतः ऐसी इच्छुक महिलाये सहाय्यता हेतु अपने आवेदन पत्र सभा कार्यालय के पते पर भेंजें ।

- सभामंत्री

२३ डिसेंबर - बलिदान दिनानिमित्त

बलिदानी आर्य नेते - स्वामी श्रद्धानंदजी

– स्व.प्रा.एकनाथ नानेकर

आधुनिक हिंदुस्थानच्या प्रबोधन चळवळीत अनेक सुधारकांनी मोलाची कामगिरी केली आहे. स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती हे त्यातील एक अग्रगण्य सुधारक होते. वैदिक धर्मप्रचार, गुरूकुल कांगडी स्थापना, शुद्धी आंदोलन, दलितोद्धार आदी कार्यात स्वामीजींनी मोलाची भूमिका बजावली होती. तसेच आर्य समाजाला व्यापक रूप देण्यात व काँग्रेस चळवळीच्या वाढीत ही त्यांचे सक्रीय योगदान होते.

स्वामी श्रद्धानंद यांचा जन्म पंजाबातील जालंधर जिल्ह्यातील तलवन येथे संपन्न खत्री कुटुंबात झाला. त्यांचे मूळ नाव मुन्शीराम होते. त्यांचे वडील नानकचंद पोलिस अधिकारी होते. समृद्धीमधून युवा अवस्थेत ते भरकटले, नास्तिक झाले. अशा स्थितीत १८७९ मध्ये बरेली येथे त्यांचा आर्यसमाजाचे संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती यांच्याशी पहिला संपर्क आला व त्यांचे जीवनच पालटले. प्रत्यक्षपणे आर्यसमाज चळवळीशी त्यांचा संबंध १८८४ मध्ये लाहोर येथे आला. वकिली व्यवसाय करीत असतांना ते आर्यसमाजाच्या चळवळीत सक्रिय झाले. धार्मिक व सामाजिक उपक्रमात भाग घेऊ लागले. १८८८ मध्ये त्यांनी जालंधर येथे पहिली कन्या पाठशाळा काढली.

मुन्शीराम यांचा १८८८ मध्ये काँग्रेसशी पहिला संपर्क आला. जनजागृतीसाठी त्यांनी सद्धर्मप्रचारक (१८९०) श्रद्धा, सत्यवादी, तेज, दि लिबरेटर इत्यादी वृत्तपत्रे काढली. आर्यसमाज चळवळींचा पंजाबमध्ये विस्तार करण्यासाठी त्यांनी १८९२ मध्ये आर्यप्रतिनिधी सभा पंजाबची निर्मिती केली. ते सर्वसंमतीने अध्यक्ष निवडले गेले. भारतीय संस्कृतीचे जतन व पाश्चात्य ज्ञानाचा अभ्यास करण्याच्या दृष्टीने त्यांनी १९०२ मध्ये कांगडी (हरिद्वार) येथे गुरूकुलाची स्थापना केली. त्यांच्या कार्यक्षेत्राची व्याप्ती वाढत गेली. १९०९ मध्ये आर्यसमाजाच्या अखिल भारतीय स्तरावरील सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा, दिल्ली या संस्थेचे अध्यक्ष निवडले गेले. त्यांनी हिंदी भाषेच्या केलेल्या सेवेमुळे त्याच वर्षी भागलपूर येथे भरलेल्या हिंदी साहित्य संमेलनाचे ते अध्यक्ष निवडले गेले.

सामाजिक चळवळी बरोबरच काँग्रेसशी त्यांच्या संपर्क वाढला. म.

गांधीच्या दक्षिण आफ्रिकेतील लढ्यासाठी गुरूकुल कांगडीच्या विद्यार्थ्यांची खरी कमाई करून निधी पाठविला. १९१५ मध्ये म. गांधी गुरूकुल कांगडी येथे आले असता स्वामी श्रद्धानंदांनी त्यांना सर्वप्रथम महात्मा असे संबोधले. म. गांधी स्वामी श्रद्धानंदांना आपले थोरले भाऊ मानत होते. रोलेट ॲक्ट विरूद्ध चालू असलेल्या असहकार आंदोलनाचे दिल्लीतील नेतृत्व स्वामी श्रद्धानंदांनी केले. ३० मार्च १९१९ या दिवशी दिल्लीतील चांदणी चौक, घंटाघर येथील निःशस्त्र सत्याग्रहींवर गोळीबार करणाऱ्या पोलिसांना ते सामोरे गेले. **'मैं खडा हूँ, गोली मारो ।'** असे आवाहन त्यांनी केले. भडकलेल्या २५ हजाराच्या जमावाला श्रद्धानंदांनी काही क्षणात शांत केले. या काळातील त्यांच्या भूमिकेमुळे दिल्लीतील जामा मशिदीमध्ये त्यांना व्याख्यानासाठी बोलावले गेले व ४ एप्रिल १९१९ या दिवशी ३० हजार मुस्लिमांसमोर त्यांना वेदमंत्रांच्या आधारे अपले विचार मांडले. याच वर्षी अमृतसर येथे भरलेल्या काँग्रेसच्या अधिवेशनाचे स्वागताध्यक्ष म्हणून त्यांची निवड केली. या प्रसंगी काँग्रेसच्या व्यासपीठावरून श्रद्धानंदांनी दलितांच्या अडचणी व उपाययोजना मांडल्या. दलितांच्या प्रश्नावरून मतभेद झाल्याने त्यांनी १९२३ मध्ये काँग्रेसचा राजीनामा दिला. आर्यसमाजामध्ये दलितोद्धार सभा स्थापन करून दलितोद्धार चळवळीसाठी संपूर्ण देशभर दौरे केले.

श्रद्धानंदांच्या समोर हिंदू संघटनेचे दोन पैलू होते. नवमुस्लिमांना पुन्हा हिंदू धर्मात घेणे व दलित जातींना उन्नत करणे. शुद्धी सभेच्या माध्यमातून त्यांनी ३० हजार मलकांनी मुसलमांनांना पुन्हा हिंदू धर्मात घेतले. त्यामुळे मुस्लिम श्रद्धानंदांवर चिडून हाते. मार्च १९२६ मध्ये कराची येथील असगरी बेगम आपल्या मुलांसह दिल्लीला आली. तिने आपल्याला हिंदू धर्मात घ्यावे, अशी विनंती स्वामी श्रद्धानंदांना केली. तिची व तिच्या मुलांच्या शुद्धी केली गेली. तिचे नाव शांतीदेवी ठेवले गेले. तिच्या पतीने भरलेला खटला फेटाळला गेला. या घटनेचा सूड घेण्यासाठी अब्दुल रशिद या धर्मांधाने २३ डिसेंबर १९२६ रोजी दिल्ली येथे श्रद्धानंदांवर गोळ्या झाडून त्यांची हत्या केली. आयुष्यभर धाडसाने अडचणीवर मात करणाऱ्या स्वामी श्रद्धानंदांना वीर हौताम्य प्राप्त झाले.

दलितोद्धारक चळवळीचे महत्व ओळखून त्यांनी आपले सर्व आयुष्य त्यासाठी वेचले. म्हणून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर त्यांच्याबद्दल म्हणतात- 'स्वामी श्रद्धानंद हे अस्पृश्याचे सर्वात मोठे व अत्यंत कळकळीचे कैवारी होते.'

सभेच्या स्थिरनिधी- वेदप्रचाराचा भक्कम आधार

–ज्ञानकुमार आर्य (प्रतिष्ठित सदस्य, म.आ.प्र.सभा)

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।' हे आर्य समाजाचे बोधवाक्य आहे. अर्थात संपूर्ण जगाला आर्यश्रेष्ठ बनवणे. या ध्येयाच्या पूर्तीसाठी आपल्या स्थापनेपासून आर्यसमाज कार्यरत आहे. वैदिक विचारांचा प्रचार-प्रसार हेच आर्यसमाजाचे उद्दिष्ट आहे. महर्षी दयानंदांनी आपली संपूर्ण हयात या कार्यात खर्ची घातली आणि आपल्या पश्चात हे कार्य अव्याहतपणे चालावे, यासाठी आर्यसमाजाची स्थापना केली.

आर्यसमाजाच्या मागील तीन-चार पिढ्यांनी आर्यसमाजाच्या प्रचारप्रसाराचे हे कार्य अत्यंत निष्ठेने, तळमळीने परिश्रमपूर्वक व प्रामाणिकपणे केले. त्या काळात आजच्यासारखी प्रवासाची व संचाराची वेगवान साधने नसतांनाही जमेल त्या मार्गांनी अतिशय कष्ट घेऊन त्यांनी हे कार्य केले. त्यामानाने आज सर्व प्रकारच्या सोयीसुविधा, साधने असतांनाही म्हणावे तेवढे प्रचारकार्य होत नाही. स्वातंत्र्यानंतर या कार्यात कमालीची शिथिलता आलेली आहे. त्या त्या प्रांतातील प्रतिनिधी सभा आपापल्या क्षमतेप्रमाणे हे कार्य चालू ठेवण्याचा प्रयत्न करत आहेत.

स्थिरनिधींची आवश्यकता :

जगात सर्व सोंगे आणता येतात, पण पैशाचे सोंग आणता येत नाही. कोणत्याही संस्था व संघटनेस प्रचारकार्यासाठी तनमनापेक्षा धनाची आवश्यकता सर्वाधिक असते. हे धन विविध मार्गांनी प्राप्त करावे लागते. शतांश, वर्गणी, दान, देणग्या, निधी असे धनसंग्रहाचे विविध स्त्रोत आहेत.

या सर्वांमध्ये स्थिरनिधी किंवा कायम ठेव हा धनसंग्रहाचा उत्तम मार्ग आहे. तात्पुरत्या प्रासंगिक कार्यासाठी वर्गणी, दान इ. स्वरूपात मर्यादित निधी गोळा केला जातो. परंतु दीर्घकालावधीसाठी कराव्या लागणाऱ्या कार्यास हा तात्पुरता निधी पुरेसा होत नाही. पुरेशा निधीअभावी कार्य अर्धवट होते किंवा बंद पडते. इच्छित उद्दिष्ट साध्य होत नाही म्हणून मोठ्या रक्कमेच्या स्थिरनिधी उभ्या कराव्या लागतात.

महाराष्ट्र सभेची विविधांगी कार्ये :

संपूर्ण आर्य जगतात महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा ही नियोजनपूर्वक विविध स्वरूपाची शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक व धार्मिक कार्य करते. या कार्याची सूची **'वैदिक गर्जना'** या सभेच्या मुखपत्रात प्रत्येक अंकात दिली जाते.

वैदिक गर्जना मासिक, आर्य

दिनदर्शिका, वैदिक साहित्याचे प्रकाशन, मानवता संस्कार शिबिरे, योगासन, प्राणायाम, शिबिरे, आर्यवीर दल व पुरोहित प्रशिक्षण शिबिरे, स्वास्थ्यरक्षा शिबिरे, मानव जीवन कल्याण वेदप्रचार अभियान (श्रावणी), मानवता निर्माण वैदिक व्याख्यानमाला, राज्यस्तरीय वक्तृत्व, निबंध व संस्कृतस्पर्धा, विद्यार्थी व विधवा साह्यता योजना, वैदिक साहित्य भेट योजना, जातिनिर्मूलन अभियान, गौ-कृषि सेवायोजना, पर्जन्यवृष्टी महायज्ञ, आपत्कालीन सहायता योजना अशी सर्वांच्या कल्याणाची महत्वपूर्ण कामे या सभेकडून केली जातात.

अशी विविधांगी कार्ये करणारी महाराष्ट्र सभा ही देशातीलच नव्हे, तर जगातील आर्य प्रतिनिधी सभांमधील एकमेव सभा आहे. या गोष्टीचा उल्लेख आम्ही यापूर्वीही आमच्या अनेक लेखांमधून व भाषणांमधून केलेला आहे. याचा आम्हा सर्वांना सार्थ अभिमान आहे. हे श्रेय सभेच्या पुरूषार्थी नेतृत्वाचे व त्यांना साथ देणाऱ्या सर्व आर्यसमाजी व आर्यसमाजेतर बंधु-भगिनींचे आहे.

स्थिर निधीमधील सहभागी घटकः

आर्यसमाजाच्या वरील स्वरूपाच्या प्रचार प्रसाराच्या कार्यासाठी लागणारे मोठ्या प्रमाणातील धन सभेने आपल्या स्थापनेपासून (५ मार्च १९७७ पासून) स्थिरनिधींच्या स्वरूपात जमविले आहे. सुरूवातीची कांही वर्षे सभेचे कार्यालय वाजेगाव, नांदेड येथे होते. नंतर ते परळीला आल्यानंतर स्थिरनिधींच्या संख्येत कल्पनातीत वाढ झाली आहे. या निधी महाराष्ट्रातील पुरूषार्थी आर्यांच्या नावाने स्थापन झालेल्या आहेत. त्यातील काही दिवंगत व्यक्तींच्या तर काही हयात व्यक्तींच्या नावे आहेत.

वास्तविक व्यक्तींच्या नावे स्थिर निधी स्थापन करणे हे केवळ एक निमित्त आहेत. त्या व्यक्तीच्या असामान्य जीवनकार्यापासून इतरांनी प्रेरणा घ्यावी व त्यानिमित्ताने सभेच्या प्रचारकार्यास सर्वांच्या हातभार लागावा, हा त्यामागील मुख्य हेतू आहे. आतापर्यंत झालेल्या व आता होऊ घातलेल्या स्थिरनिधी ज्या व्यक्तींच्या नावे आहेत, त्यांच्या कमी-अधिक कार्याचा ऊहापोह येथे कोणी करू नये. ज्याअर्थी सभेच्या त्या व्यक्तींची निवड केली आहे, त्याअर्थी सभेच्या आवाहनास यथाशक्ती प्रतिसाद देणे हे आपले कर्तव्य आहे. ज्यांच्या नावे स्थिरनिधी झालेल्या नाहीत, त्यापुढे चालू यथावकाश होतील. हे गृहित धरावे. जसजशी सभेच्या कार्याची व्याप्ती वाढेल, तसतशी नव्या स्थिरनिधी होत राहतील.

स्थिरनिधीची ठराविक रक्कम जमा करण्यासाठी कोणाकोणाचा सहभाग असावा

? याचाही विचार येथे अपेक्षित आहे. यामध्ये प्रामुख्याने तीन घटकांचा सहभाग महत्वाचा आहे. त्यात पहिला घटक जवळच्या नातलगांचा आहे. मुले-मुली, भाऊ-बहिणी, व्याही, जावई, साडू, मेहुणे इ. व्यक्ती या घटकात येतात. आपल्या प्रिय व्यक्तींचा स्थिरनिधीच्या रूपाने सभेतर्फे राज्यपातळीवर गौरव होत आहे. याचा आनंद मानून या पहिल्या घटकातील व्यक्तींनी अधिकाधिक योगदान दिले पाहिजे.

दुसरा घटक आर्यसमाजी परिवारांचा आहे. त्या-त्या आर्य समाजामधील वा गावातील-शहरातील हे आर्यसमाजी परिवार आहेत, त्यांनीही आपल्या समाजाच्या व्यक्तींचा गौरव होत आहे म्हणून निधी द्यावा. तिसरा गट म्हणजे दुरचे नातलग (नातलगांचे नातलग), मित्र, शेजारी आणि उद्योग-व्यवसाय, नोकरीच्या निमित्ताने संपर्कात येणाऱ्या व्यक्ती आदींचा आहे. अशा व्यक्तींनी 'एका सत्कार्यास आपला हातभार लागत आहे, आपले दान सत्पात्री जात आहे,' या भावनेने स्थिरनिधीतील वाटा उचलावा. अशा प्रकारे सर्व घटकांनी आपापल्या परीने सहकार्य केले, तर नियोजित स्थिरनिधी निश्चितच पूर्ण होतील **'इदं न मम'** या यज्ञीय त्यागभावनेने हा स्थिरनिधीरूपी यज्ञ सर्वांनी मिळून पार पाडावा, ही विनंती.

-सीतारामनगर, लातूर
मो.९६२३८४२२४०

वार्ता विशेष

डॉ. गर्जे यांच्या ग्रंथाचे प्रकाशन

प्रसिद्ध विद्वान व लेखक डॉ. चंद्रकांत गर्जे यांनी आपले वडील दिवंगत श्री विश्वनाथरावजी गर्जे यांच्या जीवन व कार्यावर आधारित लिहिलेल्या **'दीनांचा कनवाळू विश्वनाथ'** या ग्रंथाचे प्रकाशन दि. २४ ऑक्टोबर २०१५ रोजी विविध मान्यवरांच्या उपस्थितीत संपन्न झाले. या ग्रंथात लेखकाने आपल्या वडिलांच्या आठवणी, विविध क्रांतिकारी प्रसंग, प्रेरणाप्रद घटना यांना उजाळा दिला असून त्यांच्या कौटुंबिक, सामाजिक व लोकोपकारी कार्याचा आढावा घेतला आहे.

सदरील ग्रंथाचे प्रकाशन बसवकल्याण येथील आर्य समाजात श्री रेवणसिद्धअप्पा कैकाडी यांच्या हस्ते व कर्नाटक सभेचे प्रधान श्री सुभाषजी आष्टीकर यांच्या अध्यक्षतेखाली पार पडले. कार्यक्रमास प्रमुख पाहुणे म्हणून सर्वश्री डॉ. वेदप्रकाश उदयभानू आर्य, नारायणराव भानुप्रसाद पांडे, सुभाष सुत्रावे (सभामंत्री), माणिकराव लाड, प्राचार्य वेदमुनिजी वेदालंकार आदी उपस्थित होते. डॉ. चंद्रकांत गर्जे यांनी प्रास्ताविक तर श्री सुशील गर्जे यांनी सूत्रसंचलन केले.

'वेदविचारांनीच समस्यांचे निवारण' – पं. महेन्द्रपालजी

सध्याच्या वाटत्या समस्यांचे निवारण स्वामी दयानंदांनी प्रतिपादित केलेल्या विशुद्ध वैदिक विचारांमुळेच होऊ शकते, असे प्रतिपादन वैदिक विद्वान पं. महेंद्रपालजी आर्य यांनी केले.

किल्लेधारूर येथील आर्य समाजाचा श्रावणी वेदप्रचार उत्सव दि. ७ ते १३ सप्टेंबर या कालावधीत उत्साहात साजरा झाला. यात व्याख्याते म्हणून पं.महेंद्रपालजी आर्य व भजनोपदेशक म्हणून पं. सुखपालजी आर्य यांना आमंत्रित करण्यात आले होते. आपल्या अभ्यासपूर्ण भाषणांतून पं. महेंद्रपालजींनी विविध विषयांना स्पर्श करीत श्रोत्यांचे प्रबोधन केले. परखड विचारांद्वारे इस्मामिक मताचे खंडन करीत जगात केवळ वैदिक तत्वज्ञानच सर्वोपरी असल्याचे त्यांनी सांगितले. तर पं. सुखपालजी आर्य यांनी ईश्वरभक्ती, आदर्श, कुटूंब व नातेसंबंध, राष्ट्रभक्ती, जीवननिर्मिती आदी विषयांवर भजनांच्या माध्यमाने प्रकाश टाकला. त्यांना पं. शंकर शर्मा यांनी तबल्यावर साथ दिली. पं. शक्तिसिंह यांनीही कांही भजने सादर केली.

या श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमांना यशस्वी करण्यासाठी संस्थेचे प्रधान श्री प्रमोदकुमारजी तिवारी, मंत्री ॲड. प्रमोद मिश्रा, सोमनाथअप्पा आर्य, कमलाकर इंदुरकर, पं. वैजनाथराव वावधाने, पं. भारत कापसे, काशिनाथ चिंचाळकर, श्रीमती रमादेवी तिवारी, प्रवीण जवकर, उद्धव खाडे आदींनी विशेष परिश्रम घेतले.

अंजनडोह येथे श्रावणी उत्साहात

किल्लेधारूर तालुक्यातील मौजे अंजनडोह येथील आर्य समाजात दि. ५ व ६ सप्टेंबर रोजी श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम उत्साहात साजरा झाला. वैदिक विद्वान पं. महेंन्द्रपालजी आर्य व भजनीक पं. सुखपालजी आर्य यांनी उपस्थितांना मार्गदर्शन केले. संस्थेचे संस्थापक प्रधान श्री विठ्ठलराव आदमाने यांच्या परिवारात आयोजित यज्ञ, भजन व प्रवचन कार्यक्रमांना ऐकण्यासाठी श्रोते मोठ्या प्रमाणात उपस्थित राहिले. यज्ञसत्रात पुणे येथील अभियांत्रिकी महाविद्यालयात शिक्षण पूर्ण केलेली कु. सुजाता (मंत्री श्री युवराज कांबळे यांची कन्या) हिला पंडितजींनी यज्ञोपवीत धारण करविला. याप्रसंगी पंडितजींनी आपल्या प्रवचनातून आर्य समाजाचे स्त्री विषयक विचार मांडले. कार्यक्रमाच्या सफलतेकरिता सर्वश्री आदमाने, कांबळे, पंचुभाई, सुबराव सोळुंके आदींनी प्रयत्न केले.

श्रीमती मदनुसरे स्मृति संस्कृत स्पर्धा संपन्न

उदगीर येथील आर्य समाजातर्फे प्रतिवर्षाप्रमाणे यावर्षी दि. ३० ऑगस्ट रोजी दिवंगत मातुःश्री श्रीमती इंदिराबाई नरसिंगराव मदनसुरे यांच्या स्मरणार्थ घेण्यात आलेल्या संस्कृत भाषण स्पर्धेला उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला. क्रियाशील आर्य कार्यकर्ते व प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डॉ. बी.एन.मदनसुरे व डॉ. सौ.सुजाता मदनसुरे यांच्या संपूर्ण सहकार्याने आयोजित या स्पर्धेचे संयोजन प्रा.डॉ. नरेन्द्र शास्त्री (शिंदे) यांनी केले होते.

या स्पर्धेत ५३ विद्यार्थ्यांनी विविध विषयांवर संस्कृतात भाषणे दिली. सर्वश्री प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी व डॉ. मदनसुरे यांची परीक्षकांची भूमिका बजावली. ही स्पर्धा लहान व मोठा अशा दोन गटातून घेण्यात आली यात छोट्या गटातून कु. वैष्णवी गुरूडे (प्रथम), चि. दीपक हुगे (द्वितीय) तर कु. दिव्या कडोळे (तृतीय), तर मोठ्या गटातून कु. आत्मतेजा कावरे (प्रथम), चि. प्रतीक जाधव (द्वितीय) हे विद्यार्थी विजयी ठरले. या विजेत्यांना कार्यक्रमाचे अध्यक्ष धर्ममुनिजी यांच्या शुभहस्ते पारितोषिके प्रदान करण्यात आली. प्रास्ताविक प्रा. नरेन्द्र शास्त्री तर संचलन आनंद हुरदळे, परीक्षकांचे मनोगत कथन डॉ. मदनुसरे व आभार प्रगटन प्रमोद कावेर यांनी केले, कार्यक्रम सफल करण्यासाठी सौ. मधुमती शिंदे, सौ. हुरदळे, राजेंद्र वलाकटे, सौ. चौहान आदींनी प्रयत्न केले.

'वेदज्ञानाने सारे जग सुखी बनते' - पं.ब्रिजेशजी

'मानवनिर्मित मत-संप्रदाय व जातिभेदांमुळे जगात हिंसक, अशांत व विद्वेषी वातावरण होऊन सध्या सर्वत्र दु:खाचे वातावरण बनत आहे. अशा परिस्थितीत वेदज्ञानाच्या आचरणामुळे सारे जग सुखी, आनंदी व सहिष्णु बनु शकते', असे उद्‌गार गाजियाबाद येथील वैदिक पंडित श्री ब्रिजेशजी शास्त्री यांनी काढले.

दि.२३ ते २९ ऑगस्ट दरम्यान हदगाव(जि.नांदेड) येथे आयोजित श्रावणी वेदप्रचार सप्ताहात त्यांनी प्रमुख व्याख्याते म्हणून प्रबोधन केले. तर आर्यभजनोपदेशक पं.प्रकाशमुनिजी आर्य यांनी आपल्या मधुर भजनांच्या माध्यमाने मोलाचे मार्गदर्शन केले. श्रावणी उत्सवात विद्वानांचे विचार ऐकण्यासाठी श्रोत्यांनी चांगलीच गर्दी केली होती. रोज सकाळी यज्ञ, भजन, प्रवचन व रात्रीही भजन संगीत व व्याख्यान असे कार्यक्रम पार पडत असत.

कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी प्रधान श्री शिंदे, मंत्री श्री देशमुख व इतर पदाधिकाऱ्यांनी परिश्रम घेतले.

'वेदधर्माचा अंगिकार करावा'-विद्यादेवजी

जीवन आनंदी, यशस्वी व सर्वार्थाने सुविकसित करण्यासाठी सर्वांनी नैतिक मूल्यांवर आधारित वेदमार्गाचा अंगिकार करावा, असे आवाहन प्रख्यात वैदिक पंडित आचार्य श्री विद्यादेवजी शास्त्री यांनी केले. नांदेड येथील आर्य समाजाच्या श्रावणी वेदप्रचार उत्सवात ते प्रमुख मार्गदर्शक वक्ते म्हणून बोलत होते. तीन दिवस चाललेल्या या उत्सवात आचार्यजींनी विविध विषयांवर सारगर्भित प्रवचने दिली. तर आर्य भजनोपदेशक पं.कर्मवीरजी आर्य यांनी आपल्या भजनांद्वारे मोलाचे मार्गदर्शन केले. दररोज सकाळी हवन, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यक्रम तर रात्री सामाजिक, राष्ट्रीय विषयावर व्याख्याने संपन्न झाली. दरम्यान दोन्ही पंडितांनी दत्तनगर भागात ज्ञानेश्वर अभ्यास मंडळातर्फे आयोजित कार्यक्रमात बहुमूल्य मार्गदर्शन केले. प्राचार्य तुंगार यांनीही विचार मांडले. हा श्रावणी उत्सव यशस्वी करण्यासाठी प्रधान डॉ.सौ.शारदा तुंगार, मंत्री नारायणराव कुलकर्णी तसेच यादव भांगे, सत्येंद्र आर्य, संभाजी किरकन, तांदळे, सोळंके, कुरुडे, कोकणे, पवार आदींनी परिश्रम घेतले.

गुंजोटी येथे सामूहिक दसरा उत्सव साजरा

गुंजोटी येथे आर्य समाजाच्या प्रमुख नेतृत्वाखाली दि.२२ सप्टेंबर रोजी **'सामूहिक दसरा उत्सव'** मोठ्या उत्साहात साजरा करण्यात आला. सकाळी आर्य समाजात विजयादशमीनिमित्त विशेष मंत्राद्वारे वैदिक यज्ञ संपन्न झाला. यात यजमान श्रद्धेने सहभागी झाले होते.

दुपारी ३.१५ वा. आर्य समाजाच्या नूतन जीर्णोधारित भवनाच्या छतावर मान्यवरांच्या उपस्थितीत ध्वजारोहण करण्यात आले. यावेळी माडजचे वेदप्रचारक पं.श्री.कर्णसिंह आर्य महाळप्पा दुधभाते व इतरांनी **"जयति ओ३म् ध्वज व्योमविहारी"** हे ध्वजगीत सादर झाले. नंतर ढोलताशांच्या गजरात व क्रांतिकारी देशभक्तांच्या जयजयकारात गावातून भव्य शोभायात्रा(विजययात्रा) निघाली. आर्य समाज मंदिरापासून सुरु झालेल्या या मिरवणुकीत गावातील प्रमुख प्रतिष्ठित नागरिक, शिक्षक, सरपंच-उपसरपच, चेअरमन, व्यापारी, शेतकरी, शेतमजूर, विद्यार्थी, आबालवृद्ध सर्वजण उत्साहात सहभागी झाले. श्री कर्णसिंहजी व विश्वनाथ महाजन हे उंच स्वरात प्रेरक गीत गात होते. शेवटी गावालगतच्या सीमेवरील ऐतिहासिक क्रांती मैदानावर विजयोत्सव साजरा झाला.

या दसरा पर्वासाठी खास आमंत्रित

व्याख्याते श्री डॉ.अनिकेत इनामदार(उमरगा) व डॉ.नयनकुमार आचार्य (परळी) यांनी यावेळी उपस्थितांना मार्गदर्शन केले. याप्रसंगी आर्य समाजाच्या वतीने मान्यवरांचा सत्कार केले. मंत्री काशिनाथराव कदेरे यांनी आपल्या प्रास्ताविकपर भाषणात या दसरा विजयोत्सवाला ४८ वर्षांची ऐतिहासिक परंपरा असून हा उत्सव मातृभूमीच्या रक्षणासाठी प्रेरित करणारा आणि नवचैतन्य निर्माण करणारा संस्कृतीचा अनमोल ठेवा असल्याचे सांगितले. तर दोन्ही वक्त्यांनी आपल्या भाषणातून या पर्वाचे यथार्थ महत्व विषद केले. सूत्रसंचलन कोषाध्यक्ष श्री महाळप्पा दुधभाते यांनी मानले.

यज्ञामुळे पर्यावरणरक्षण - डॉ.कमलनारायणजी

यज्ञ हा वैदिक संस्कृतीचा मूलभूत पाया आहे. जगभरात वाढत चाललेले सर्व प्रकारचे प्रदूषण नष्ट करुन पर्यावरणाचे संरक्षण करावयाचे असेल तर यज्ञाचा व्यापक अर्थ जाणावा व आचरणात आणावा, असे आवाहन प्रसिद्ध पर्यावरणतज्ज्ञ व विद्वान पं.कमलनारायणजी आचार्य (रायपुर-म.प्र.) यांनी केले. पुण्यातील पिंपरी आर्य समाजात श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमात आमंत्रित विद्वान म्हणून ते मार्गदर्शन करीत होते. त्यांच्या समवेत सहारनपुरहुन आलेले सुप्रसिद्ध भजनीक पं.अमरेशजी आर्य यांनी सादर केलेल्या भजन व गीतांचा श्रोत्यांवर चांगलाच प्रभाव पडला. दररोज सकाळी व संध्याकाळी आयेजित या कार्यक्रमांना श्रोत्यांची मोठी गर्दी होत असे.हा श्रावण्योत्सव सफल करण्याकरिता संस्थेच्या पदाधिकारी व कार्यकर्त्यांनी परिश्रम घेतले.

औराद(शहा.) चा श्रावणी पर्व उत्साहात

औराद शहाजानी येथील आर्य समाजातर्फे गेल्या १० ते १२ वर्षांपासून श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमाची अभिनव परंपरा राबविली जाते. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधी सभेने निश्चित केलेल्या विद्वान व भजनोपदेशकांकरवी आठवडाभराचा वेदप्रचार उत्सव तर उत्साहात होतोच पण त्याचबरोबर पूर्ण श्रावण महिना दररोज सकाळी व संध्याकाळी नवनवीन यजमानांच्या घरी 'पारिवारिक सत्संग' आयोजित केला जातात. यामुळे वैदिक विचारांचा घरोघरी प्रसार होण्यास मदत मिळते. या कार्यक्रमांना यावर्षीही भरभरून प्रतिसाद मिळाला.

'धर्माचरणाने जीवन यशस्वी' - पं.देशराज आर्य

सर्व सुखांचे मूळ धर्म आहे, याउलट अधर्म हे दुःखाचे कारण आहे.

म्हणून जीवन सर्व दृष्टीने यशस्वी करु इच्छिणाऱ्या माणसांनी प्रयत्नपूर्वक धर्माचरणावर भर द्यावा, असे आवाहन भरतपुर (राज.) येथून आमंत्रित वेदपंडित श्री देशराजजी शास्त्री यांनी औराद(शहा.) च्या साप्ताहिक वेदप्रचार उत्सवादरम्यान केले. दि.३० ऑगस्ट ते ५ सप्टेंबर या काळात येथील आर्य समाजाचा श्रावणी सप्ताह साजरा झाला. भजनोपदेशक पं.लाखनसिंहजी आर्य(मथुरा) यांनी भजनांच्या माध्यमाने उपदेश केला. पं.देशराजजी यांनी आठवडाभर धर्माच्या धैर्य, क्षमा, मनोनिग्रह, अचौर्य, शौच, इंद्रियनिग्रह बुद्धी, विद्या, सत्य व अक्रोध या दहा लक्षणांची सुव्यस्थित व सुगम्य अशी व्याख्या आपल्या प्रवचनाद्वरे केली.

मासिक सत्संग-वेदप्रचाराची यशस्वी सांगता

दि.१५ ऑगस्ट पासून चालू असलेल्या श्रावणमास वैदिक सत्संगाची सांगता दि.१३ सप्टेंबर रोजी उत्साहात झाली. महिनाभरात प्रतिदिनी सकाळी व सायंकाळी अशा दोन्ही वेळा नव्या यजमानांच्या घरी यज्ञ, भजन व प्रवचनांचे कार्यक्रम पार पडले. यानिमित्ताने एकूण ५८ परिवारात वैदिक विचार पोहाचविण्याचा प्रयत्न झाला. या सर्व यज्ञाचे पौरोहित्य पं.वैजनाथराव करकेले, पं.प्रकाशसिंह कच्छवा व इतरांनी केले. या यज्ञाच्या पूर्णाहुतीचा कार्यक्रम दि.१३ सप्टेंबर रोजी डॉ.नयनकुमार आचार्य यांच्या पौरोहित्याखाली पार पडला. यावेळी यजमान म्हणून पोलिस निरीक्षक श्री सुधीर चव्हाण, प्राचार्य श्रीराम पाटील, शंकर पोतदार, सुवर्णकार दगडू गिरबने हे सपत्नीक सहभागी झाले. महिनाभरातील कांही यजमानांनीही व इतर उपस्थितांनीही यावेळी आहुत्या दिल्या. तत्पश्चात् श्री डॉ.कच्छवा व कजनशेट्टी यांनी भजने सादर केली. नंतर श्री नयनकुमारजींचे **'आत्मयज्ञाने साधावे विश्वकल्याण'** या विषयावर प्रवचन पार पडले.

या कार्यक्रमास स्वा.सै.हिरामनजी डोईफोडे आवर्जून उपस्थित होते. हा व्यापक श्रावण वेदप्रचारोत्सव सफल करण्यासाठी संस्थेचे प्रधान श्री गोविंदराव भिंगोले, मंत्री भरत बियाणी, उपप्रधान प्रताप मुळे, उपमंत्री मधुसूदन बियाणी, कोषाध्यक्ष दीपक चांडक, सहकोषाध्यक्ष आदर्श व्यास, डॉ.प्रकाश कच्छवा, पं.करकेले आदींनी मोलाचे योगदान दिले. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचलन मधुसूदन बियाणी यांनी केले, तर आभार श्री कच्छवा यांनी मानले. शेवटी महाप्रसाद(भोजना)ने कार्यक्रमाचा शेवट झाला.

उदगीर श्रावणी कार्यक्रमांस उत्स्फूर्त प्रतिसाद

'मानवी जीवन सफल करण्यासाठी वेदज्ञानाचा आश्रय घेत थोर महात्म्यांच्या यज्ञमय जीवनाचा आदर्श घ्यावा.' असे प्रतिपादन वेदाभ्यासक पं. देशराज आर्य यांनी उदगीर येथील श्रावणी कार्यक्रमात केले. दि. ६ ते १२ सप्टेंबर दरम्यान येथील आर्य समाजाचा श्रावणी वेदप्रचारोत्सव उत्साहात पार पडला. याकरिता वैदिक विद्वान म्हणून श्री आर्य यांना तर भजनोपदेशक म्हणून पं. लाखनसिंह आर्य यांना प्रांतीय सभेतर्फे पाठविण्यात आले होते. श्री देशरावजी आर्य यांनी रामायण, महाभारतातील विविध प्रेरक प्रसंगांद्वारे आदर्श समाज निर्मितीस आवश्यक अशा मार्गदर्शक तत्वांचे प्रतिपादन केले. त्यांचे अभ्यासपूर्ण विचार श्रोत्यांना फारच आवडले, तर पं. लाखनसिंह यांनी सोप्या पद्धतीने मधुर भजनातून मौलिक विचार मांडले.

हा श्रावणी उत्सव यशस्वी करण्यासाठी आर्य समाजाचे प्रधान प्रा.श्री बाबुरावजी नवटक्के, मंत्री डॉ. सौ.सुजाता मदनसुरे, कोषाध्यक्ष श्री अजितकुमार सरसंबे, प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी, डॉ. नरेंद्र शिंदे, सतीश मगदाळे, प्रकाशवीर आर्य सुबोध अंबेसंगे आदींनी प्रयत्न केले.

डॉ.लोखंडे- ग्रंथप्रकाशन, सन्मान व व्याख्याने

प्रसिद्ध आर्य लेखक प्रा.डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे (लातूर) यांनी लिहिलेल्या **'मराठवाड्याचा मुक्तीलढा आणि हैद्राबाद संस्थान'** या ग्रंथाचे नुकतेच लातूर येथील दयानंद सभागृहात एका विशेष कार्यक्रमात प्रकाशन करण्यात आले. दुष्काळ निवारण समितीचे अध्यक्ष प्रा.एच.एम.देसरडा यांच्या अध्यक्षतेखाली पार पडलेल्या या प्रकाशन सोहळ्यात जलविशेषज्ञ प्रा. विजय दिवाण यांच्या शुभहस्ते सदरील ग्रंथाचे विमोचन करण्यात आले. यावेळी सर्वश्री प्रा. नरेशजी गुडे, ॲड. मधुकर गिरी, स्वा.सै.जीवनधर शहरकर, ॲड. धनंजय पाटील, सूर्यप्रकाश धूत, विजय दबडगांवकर, सूर्यकांत वैद्य आदी उपस्थित होते.

त्याचबरोबर डॉ.श्री लोखंडे यांनी वैदिक साहित्यनिर्मिती आणि (आर्य) समाजाच्या जडणघडणीत दिलेल्या योगदानाबद्दल नुकताच त्यांचा जणगण परिषदेतर्फे **'समाजरत्न'** हा पुरस्कार देऊन सन्मान करण्यात आला. माजी मुख्यमंत्री दिवंगत विलासराव देशमुख यांच्या स्मरणार्थ ठेवण्यात आलेला हा पुरस्कार श्री अभिजित देशमुख यांच्या हस्ते देण्यात आला.

तसेच लोखंडे यांची वाराणसी

येथील म.दयानंदाचे शास्त्रार्थ स्थळ आनंद बाग येथे व्याख्याने संपन्न झाली. १४६ वर्षांपूर्वी स्वामी दयानंदांची ४० पौराणिक विद्वानांसमवेत विजयी शास्त्रार्थ झाले होते. त्यानिमित्त दि. २१ ते २३ नोव्हेंबर दरम्यान आयोजित वैदिक शास्त्रार्थ महोत्सवात श्री लोखंडे यांची तीन चार व्याख्याने पार पडली व त्यांचा सत्कार करण्यात आला.

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे वर्षभरातील कार्यक्रम

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

शंकरराव सूर्यवंशी यांचे निधन

गुंजोटी येथील आर्य समाजाचे अंतरंग सदस्य व निष्ठावान् आर्य कार्यकर्ते श्री शंकरराव गोविंदराव सूर्यवंशी (वय ७८) यांचे दि. १६ ऑक्टोबर रोजी सायंकाळी ५.३० वा. च्या सुमारास अल्पशा आजाराने निधन झाले. त्यांच्या पश्चात् पत्नी व भावंडाचा परिवार आहे. निपुत्रिक असलेल्या श्री सूर्यवंशी यांनी स्थानिक पातळीवर आर्य समाजाच्या प्रचार कार्यात उत्साहाने भाग घेतला होता. वेदज्ञानावर त्यांची नितांत निष्ठा होती दानादी परोपकारी कार्यात ते नेहमी अग्रणी राहत असत.

दिवंगत श्री शंकररावांच्या पार्थिवावर श्री पं. महाळप्पा दुधभाते यांचे पौरोहित्याखाली पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले यावेळी आर्य समाजाचे पदाधिकारी व कार्यकर्ते मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होते.

माणिकराव भोसले यांना पत्नीशोक

आंतरजातीय विवाह मंडळाचे संस्थापक सदस्य व रामनगर लातूर येथील आर्य समाजाचे ज्येष्ठ सदस्य श्री माणिकरावजी भोसले यांच्या धर्मपत्नी सौ.चंद्रभागाबाई भोसले यांचे २० नोव्हेंबर २०१५ रोजी रात्रौ ८.३० सुमारास हृदयविकाराने आकस्मिक निधन झाले. मृत्युसमयी त्यांचे वय ८३ वर्षाचे होते. अतिशय कष्टाळू, सहनशील, प्रेमळ, अल्पशिक्षित परंतु उच्चशिक्षितांनाही लाजविणाऱ्या सेवाभावी वृत्तीच्या असलेल्या सौ.चंद्रभागाबाई या रामनगर परिसरातील आर्यजनांच्या खरोखरच माताजी होत्या. जीवनभर आपले पती श्री माणिकरावजी यांच्या खांद्याला खांदा लावून आर्य समाजाच्या प्रचार कार्यात त्या प्रयत्नशील होत्या. आपल्या अंतर्मनातील दुःख व वेदना त्यांनी कधीही व्यक्त होऊ दिल्या नाहीत. कुटूंबांना आर्य विचारांनी संस्कारित करण्याचे मोलाचे कार्य त्यांनी जीवनभर केले. पतिदेवांनी आरंभिलेल्या आंतरजातीय विवाहाच्या यज्ञकार्यात त्यांनी बजावलेली कार्यशीलता आर्यसमाज कधीही विसरू शकणार नाही. सततचा राबता हात, आदरातिथ्य व वैचारिक प्रगल्भता ही माताजींची वैशिष्ट्ये होती. त्यांच्या मागे पती, दोन मुले, मुली, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे. माताजींच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

दिवगंत आत्म्यांना भावपूर्ण श्रद्धाजंलि व शोकाकूल कुटूंबियांच्या दुःखात सभेचा सहभाग

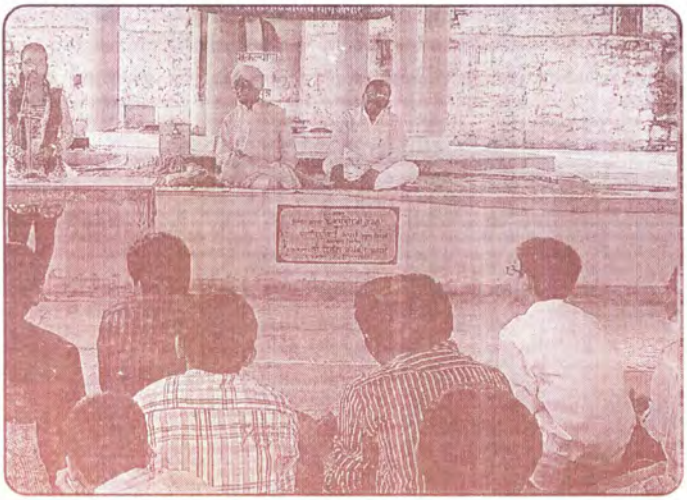

आर्य समाज उदगीर में आयोजित श्रीमती मदनसुरे स्मृति संस्कृत भाषण स्पर्धा में भाषण देते हुए एक छात्रा । मंच विराजमान हैं श्री धर्ममुनिजी व श्री प्रमोदजी शास्त्री ।

आर्य लेखक डॉ.श्री चंद्रशेखरजी लोखंडे का वाराणसी में आयोजित म.दयानंद वैदिक शास्त्रार्थ महोत्सव में सम्मान करते हुए वहां की आर्य समाज के पदाधिकारी ।

डॉ.चंद्रकांतजी गर्जे द्वारा लिखित ग्रंथ का विमोचन करते हुए सर्वश्री रेवणसिद्धअप्पा, डॉ.वेदप्रकाशजी, सुभाषजी आष्टीकर, सुत्रावे, पांडे, लाड, वेदमुनिजी आदि ।

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा, सेहत के प्रति जागरुकता, शुध्दता एवं गुणवत्ता, करोंडों परिवारों का विश्वास, यह है एम.डी.एच.का इतिहास जो पिछले ९० वर्षों से हर कसौटी पर खरे उतरे हैं -जिनका कोई विकल्प नहीं। जी हां यही हैं आपकी सेहत के रखवाले -

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !

MDH
मसाले
असली मसाले
सच-सच

आर्य जगत् के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी

ESTD. 1919

MAHASHIAN DI HATTI LTD.
Regd. Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015.
Ph. : 25939609, 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com

REG.No. MAHBIL/2007/7493 ★Postal No. L/Beed/18/2015

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महार इस स्थान से प्रकाशित किया।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्र
आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्प
श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य
(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)
सौ.करुणादेवी आर्या
(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)
के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भ